मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-1, अंक:-08 दिसम्बर, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

और लगाना पड़ा था फर्श पर पोछा

(स्व.) गिरीश रंजन, फिल्म निर्देशक

सांता क्लॉज की चिट्ठी

पुष्पा 2 का ट्रेलर पटना के गांधी मैदान में हुआ लॉन्च

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख ज्यादा पसंद आया।

क्या कमियां हैं

और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंक: 08 दिसम्बर, 2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार– 800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

और लगाना पड़ा था फर्श पर पोछा (स्व.) गिरीश रंजन, फिल्म निर्देशक

03

1. तब मेरा बिहार आना पहली बार हो रहा था और मैं बहुत डरी हुई थी... 4
2. एक कविता मैंने शादी के बाद लिखी थी 'चुटकी भर सेनुर'... 6
तब मर्दों के प्रति इतना आक्रोश था कि पुलिस सर्विस
3. ज्वाइन कर सबको सबक सिखाना चाहती थी... 8
4. पुष्पा 2 का ट्रेलर पटना के गांधी मैदान में हुआ लॉन्च 10
5. अद्भुत है नेपाल का पोखरा 11
6. माहिका शाह और शरद मल्होत्रा ने 'अधूरी दास्तान' म्यूजिक वीडियो में प्यार को जीवंत किया 14
7. सांता क्लॉज की चिट्ठी 15
8. सऊदी सरकार के नए वीजा नियमों से क्या भारतीयों के लिए अब दुबई जाना मुश्किल हो जाएगा ? 16
9. परवरिश एक संस्कार है 17
10. विद्या एवं ज्ञान के अधिष्ठाता गुरु 18
11. आशिष–सुमन 19
12. तीर्थयात्रा 21
13. बॉलीवुड सुपरस्टार अनन्या पांडे ने भारत में 'न्यूटॉर्क' इंस्टीटूट ऑफ फैशन (NIF ग्लोबल) लॉन्च किया 22
14. ठंड के मौसम के लिए हेल्दी मिठाई–आंवले का लड्डू 23
15. मुंबई के पायलट सुसाइड केस में समाज को सोचने की जरूरत है 24
16. आयुर्वेदिक श्रेणी का पौधा तुलसी लाभप्रद 24
17. क्रिप्टोकरेंसी क्या है? 25

पुष्पा 2 ट्रेलर का बिहार में लॉन्च होना बदलते बिहार की कहानी है

जिस पुष्पा 2 फिल्म को लेकर फैंस के बीच बेसब्री बनी हुई थी उस बहुप्रतीक्षित फिल्म का ट्रेलर लॉन्च जब अचानक बिहार की राजधानी पटना में हुआ तो जैसे हंगामा सा हो गया।

पटना के गांधी मैदान में लाखों सिने प्रेमियों का जन सैलाब उमड़ पड़ा साउथ फिल्म इंडस्ट्री के अपने चहेते सुपरस्टार्स को करीब से देखने के लिए।

पटना के सिने प्रेमियों की दीवानगी देख इवेंट कंपनी भी खुश और पुष्पा यानी साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना भी हैरत में पड़ गए उनके लिए इतना प्यार और खुमार देखकर। अल्लू अर्जुन ने पटना के गांधी मैदान में स्टेज पर आते ही लाखों की भीड़ का झुककर अभिवादन करते हुए कहा कि, 'पुष्पा आपलोगों का यूं प्यार देखकर आपके समक्ष झुक गया।' यहां फिल्मवाले भी खुश और उनके फैंस भी खुश दिखें।

कार्यक्रम के सुपरहिट होते ही तरह तरह के गॉशिप उड़ने लगें कि, पटना में जुटी वो अप्रत्याशित भीड़ सिने प्रेमियों/अल्लू अर्जुन के फैंस की नहीं बल्कि बेरोजगार युवाओं की भीड़ थी..., इससे भोजपुरी सिनेमा और भोजपुरी सुपरस्टारों का कद कम हो गया है...इत्यादि।

खैर गॉशिप जो भी हो लेकिन इतना तो तय है कि इस बड़े कार्यक्रम के बाद बिहार की एक सकारात्मक पहचान उभर कर सामने आई है। जो काम अबतक बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री नहीं कर सकी वो पहली ही बार में साउथ फिल्म इंडस्ट्री कर के चली भी गई। बॉलीवुड वाले अबतक बिहार को लेकर मीन मेख ही निकालते रह गए और साउथ फिल्म वाले पूर्वानुमानों को धता बताते हुए बिहार वासियों का दिल जीतने के साथ साथ अपना व्यापार भी बढ़ा गए।

खबरें आ रही हैं कि सिनेमा का कोई बड़ा इवेंट पुनः बिहार की धरती पटना में होनेवाला है। अब शायद ही यह सिलसिला रुके। इससे एक बात तो साफ हो गई कि अब देशभर में बिहार की सकारात्मक छवि बननी शुरू हो गई है और साउथ फिल्म इंडस्ट्री का इतना बड़ा इवेंट यहां होना ही बदलते बिहार का संकेत है।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

और लगाना पड़ा था फर्श पर पोछा

(स्व.) गिरीश रंजन, फिल्म निर्देशक

बचपन में मुझे साहित्य से बड़ा लगाव था। शरतचंदके साहित्य ने मुझे भावुक बना दिया। नतीजा यह कि तभी से फिल्में आकर्षित करने लगीं, नाटक करने का शौक भी पुराना था। स्कूल में सोच लिया था, या तो आर्मी में जाऊंगा या फिर फिल्म में। उन दिनों पटना में हर मॉर्निंग शो में बंगाली फिल्में लगती थीं। एक बंगाली मित्र मुझे एक दिन रूपक सिनेमा हॉल में ले गया जहाँ 'पाथेर पांचाली' लगी थी। फिल्म के एक दृश्य में दुर्गा नाम की बालिका की मृत्यु हो जाती है तब पूरा हॉल सिसकियों से भर उठा और मैं भी रो रहा था वह भी बंगला नहीं समझने के बावजूद। मैंने महसूस किया कि फिल्म इतनी बड़ी विधा है जहाँ भाषा मामूली रोल अदा करती है।

अगले दिन मैं कोलकाता अपने चचेरे भाई तपेश्वर प्रसाद के पास जा पहुंचा जो 'पाथेर पांचाली' में सत्यजीत रे के असिस्टेंट एडिटर थे। पहले तो भइया नाराज हुए फिर मेरे जिद्द करने पर एक दिन साथ ले जाकर सत्यजीत रे जी से मिलवाया और कहा कि यह आपको ज्वाइन करना चाहता है। वे अंग्रेजी में बोल रहे थे और मैं हिंदी में जवाब दे रहा था। वे बोले कि डायरेक्टर बनने के लिए एडिटर होना जरूरी है, इसलिए पहले एडिटिंग ज्वाइन करो। वे बंगला में अपने एडिटर से बोले 'इसे रख लीजिये। यहीं से मेरे जीवन का स्ट्रगल पीरियड शुरू हुआ। अगले दिन मैं स्टूडियो पहुंचा।

एडिटर ने मुझे एडिटिंग रूम में भेजा और नीचे से ही वहाँ सफाई कर रहे कर्मचारी को बंगला में आवाज देकर कहा कि 'इसको दे दो, फर्श पोछेगा।' मैं अवाक रह गया लेकिन पूरा पोछा लगा दिया।

एक दिन वहीँ मेरी भेंट ऋषिकेश मुखर्जी से हो गयी जो तब फिल्म एडिटर थे। उन्होंने मुझसे कुछ सवाल–जवाब किये फिर संतुष्ट होने पर मुझे अपना सहायक बना लिया। तीन वर्षों के बाद मैं सत्यजीत जी के साथ डायरेक्शन में आ गया। इस दौरान मैंने विधा सीख ली थी। 70 के दशक में मुंबई चला गया। वहां कमलेश्वर जी की कहानी पर 'डाकबंगला' नामक हिंदी फिल्म का पहली बार निर्देशन किया। अपनी संस्कृति से प्रेरित होकर 1982 में मैंने बिहारी कलाकारों को लेकर फिल्म 'कल हमारा है' बनायी जो बहुत सफल रही। ❐ **प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'**

तब मेरा बिहार आना पहली बार हो रहा था और मैं बहुत डरी हुई थी :

गुंजन पंत, अभिनेत्री, भोजपुरी सिनेमा

मैं उत्तरांचल की रहनेवाली हूँ लेकिन मेरी परवरिश हुई है भोपाल (म.प्र.) में, जबकि मेरा कर्मक्षेत्र बन गया मुंबई। कभी सोचा नहीं था कि एक्ट्रेस बनूँगी। डॉक्टर बनना चाहती थी, हार्ट स्पेशलिस्ट (कार्डियोलॉजिस्ट) लेकिन नसीब मेरा मुझे दर्शकों का दिल चुराने फिल्म इंडस्ट्री में ले आया। तब डांस का बहुत रुझान था तो स्कूल–कॉलेज के कार्यक्रम में अक्सर हिस्सा लिया करती थी। बहुत सारे कल्चरल एक्टिविटीज में पार्टिशिपेट किया करती थी मगर ये सबकुछ शौकिया था।

एक बार मैं एक शो करने बाहर गयी तो उनलोगों को मेरा काम अच्छा लगा। उन्होंने वीनस कम्पनी का म्यूजिक वीडिओ ऑफर कर दिया। मैंने ऑडिशन दिया और सेलेक्ट होने के बाद मेरी पहली शूटिंग वीनस के एलबम के साथ हुई। एलबम से थोड़ा एक्टिंग की तरफ इंट्रेस्ट आने लगा लेकिन फिर भी म्यूजिक वीडिओ में काम करना अलग होता है और सीरियल–मूवी में काम करना अलग होता है। क्यूँकि उसमे डायलॉग डिलीवरी वगैरह होता है।

फिर मुझे सुनील अग्निहोत्री जी का दूरदर्शन का एक सीरियल ऑफर हुआ 'जिंदगी एक सफर' तो मैंने वो किया। उसके बाद बालाजी का 'करम अपना–अपना', परीक्षित साहनी जी का सीरियल 'कल्पना', 'सावधान इण्डिया' जैसे कई सारे सीरियल्स किये। सीरियल की बात करूँ तो 'जिंदगी एक सफर' का कॉन्सेप्ट सामाजिक मुद्दों पर आधारित था। उसमे कई अलग–अलग ट्रैक चलते थें और मेरे वाले ट्रैक में मैं लीड रोल कर रही थी। बिंदु दारा सिंह मेरे बड़े भाई बने थें। उसमे मुझे कुछ डिफरेंट करने को मिला था। वैसे सच कहूं तो शुरुआत से ही मुझे बहुत सारे बड़े–बड़े प्रोजेक्ट नहीं मिले बल्कि बहुत ही हार्डवर्क करके स्टेप–बाइ–स्टेप मैं आगे बढ़ी हूँ।

तब ना मैं भोजपुरी बोल पाती थी और ना ये जानती थी कि भोजपुरी फिल्में भी होती हैं। जब मुझे एक फिल्म में फाइनल किया गया तो खुश हुई कि चलो अब मैं हिंदी फिल्म करने वाली हूँ। तभी डायरेक्टर ने अचानक से बोला– "बेटा, तुम अच्छे से भोजपुरी कर लोगी... ।" यह सुनकर मैं तो हिल गयी कि ये क्या मिल गया मुझे। फिर मैंने तुरंत मना कर दिया कि "मैं काम नहीं करुँगी, मुझे भोजपुरी नहीं आती।" तब भी वे चाहते थें कि उनकी फिल्म में मैं ही काम करूँ क्यूंकि उस कैरेक्टर में मैं ही शूट हो रही थी। उन्होंने मुझे बोला– "आप स्क्रिप्ट लेकर जाओ, तैयारी करो और आप हमारी फिल्म करेंगी।" तब मैंने भी बोल दिया– "ठीक है।" फिर उस फिल्म की तैयारी में जुट गयी। हालाँकि वह फिल्म 'पिरितिया के डोर' बन ही नहीं पायी। लेकिन तबतक भोजपुरी मुझे आ गयी थी क्यूंकि मैंने खूब रिहर्सल किया था।

उसके बाद पहली भोजपुरी फिल्म की 'प्यार में तोरे उड़े चुनरिया', उसी दौरान कई और भी भोजपुरी फिल्मों के ऑफर मिलने लगें। 'प्यार में तोरे उड़े चुनरिया' के डायरेक्टर थें जगदीश सिंह। हीरो नया लड़का था। फिल्म की शूटिंग के लिए हमलोग मुंबई से बिहार के हाजीपुर, महुआ में गएँ। तब मेरा बिहार आना पहली बार हो रहा था और मैं बहुत डरी हुई थी क्यूंकि उन दिनों बिहार के बारे में कई निगेटिव बातें सुन रखी थीं कि ऐसा है वैसा है।. लेकिन जबतक आप कोई चीज को देख–जान ना लो वो समझ में नहीं आती है।

जब मैं शूटिंग के लिए बिहार आयी तो देखा कि ऐसा तो कुछ भी नहीं है जैसा हौवा बना दिया गया है। जिससे लोगों को लगता है कि बहुत ही डिफिकल्ट है बिहार जाना। लेकिन वहां तो उल्टा लोग बहुत ही अच्छे हैं, बहुत प्यार देते हैं, बहुत कॉपरेट करते हैं। मुझे तो बिहार बहुत अच्छा लगा और उसके बाद से तो मैं कितनी फिल्मों में बिहार आई। पहली भोजपुरी फिल्म के वक्त काफी गर्मी में हम शूटिंग कर रहे थें। बिहार के खेत मुझे बहुत अच्छे लगें और वहां जो केरियां (कच्चे आम) लगती हैं बड़ी–बड़ी सी तो हमलोग जहाँ पर शूटिंग करते थें वहां खूब सारा तोड़कर खाना होता था। पहली शूटिंग में मैंने पूरे गांव को इंज्वाय किया था, उसको एक्सपीरियंस किया मुझे अच्छा लगा। पहली बार मैंने उसी फिल्म में एक्शन किया था। बाइक चलाना, फाइट करना, वगैरह सारे एक्शन किये थें। बाइक चलानी तो थोड़ी आती थी मुझे क्यूंकि

बोलो जिंदगी के साथ संस्मरण साझा करती हुई अभिनेत्री गुंजन पंत

जब मैं भोपाल रहती थी वहां एक–दो बार चला चुकी थी। उसमे तो प्रॉब्लम नहीं हुई। लेकिन फाइटवाले एक्शन सीक्वेंस करना थोड़ा डिफिकल्ट था लेकिन वो भी अच्छे से हो गया।

फिल्म तो पहली थी लेकिन मैं एक्टिंग के वक्त जरा भी नर्वस नहीं हुई क्यूंकि पहले ही बहुत सारे सीरियल्स कर चुकी थी। जहाँ तक डायलॉग डिलीवरी की बात है, मुझे लगता है कि जिसकी हिंदी अच्छी होगी ना वो भोजपुरी बोल सकता है। इतना मुश्किल नहीं है भोजपुरी बोलना। कुछ खास शब्द हैं जो याद रखने पड़ते हैं। जैसे आप को 'रउआ' बोला जाता है। तो ये 'रउआ' वर्ड पहले दिन मुझे बड़ा डिफिकल्ट लगा। फर्स्ट डे जैसे ही मैंने सुना 'रउआ' तो ऐसा लगा कि अरे बाप रे ये क्या है! लेकिन अब तो इतनी रम गयी हूँ भोजपुरी में कि अब ऐसे शब्द मुझे नए नहीं लगतें। चूँकि मैं उत्तरांचल की एक पहाड़ी लड़की हूँ तो यह हैरानी की बात है और कई बार मेरे परिवारवाले मेरे से नाराज होते हैं कि तुम भोजपुरी इतना अच्छा बोल लेती हो और अपने जगह की भाषा 'कुमावनी' (पहाड़ी) तो तुम्हें आती ही नहीं। कुमावनी सच में मुझे नहीं आती लेकिन भोजपुरी बोलनी आती है ये कमाल की बात है। लेकिन खैर, मैं भोजपुरी से बहुत खुश हूँ और इसी लैंग्वेज में अबतक कितनी सारी फिल्में कर चुकी हूं। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

एक कविता मैंने शादी के बाद लिखी थी 'चुटकी भर सेनुर':

—दीप्ति कुमार, कवियत्री एवं इकोनॉमिक्स टीचर, संत डॉमनिक सेवियोज हाई स्कूल, नासरीगंज

मेरा मायका और ससुराल दोनों पटना में ही है। मेरे पापा इंजीनियरिंग कॉलेज और पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्रिंसिपल रह चुके हैं। मेरे हसबेंड श्री मनोज कुमार चार्टेड एकाउंटेंट हैं। जब मेरी शादी की बात चली तो जो मीडियेटर थें वो दोनों तरफ से परिचित थें। उन्होंने कहा कि "हमे देखने के लिए पटना जू में बुलाया गया है कि यूँ ही घूमते–टहलते लड़की को देख लेंगे।" उसी दिन आडवाणी जी रथयात्रा पर पटना आये हुए थें। राजनीतिक हलचल पैदा हो गयी थी और तब उस दिन बहुत से रास्ते बंद थें। मेरे मायके महेन्द्रू से संजय गाँधी जैविक उद्यान जाना अपने आप में पहाड़ जैसा था। बहुत मुश्किल से हम वहां पहुंचे थें। फिर वहां जू में देखने–दिखाने का कार्यक्रम शुरू हुआ। उसमे एक मजेदार वाक्या ये हुआ जो देखने लायक था। मुझे सौ प्रतिशत नहीं पता था लेकिन आभास हो गया था कि ऐसा ही कुछ है। वहां मेरी हाइट को देखने की बात हो रही थी क्यूंकि मेरी हाइट ज्यादा नहीं है और मेरे पति लम्बे कद के हैं। सब लोग मेरे बगल में खड़े होकर नापने की कोशिश कर रहे थें। वहां एकाध कोई मुझसे थोड़ा ज्यादा के थें लेकिन जो मेरी ही हाइट के थें वो भी हमसे नपाना चाह रहे थें कि हमसे कितने लम्बे हैं। ये मुझे थोड़ा नमूना टाइप का लगा और अंदर ही अंदर मुझे हंसी आ रही थी लेकिन बाकि सब बहुत अच्छे से निपट गया।

उस वक्त हम पार्ट 2 का इक्जाम देकर पार्ट 3 में गए ही थें। मतलब शादी के समय हम ग्रेजुएट भी नहीं थें। फिर मेरी शादी हुई उसके बाद मेरी आगे की पढ़ाई हुई। एक समय तो लगा कि शायद हम नहीं पढ़ पाएंगे क्यूंकि बाकि सब लोगों को देख रहे थें अपने फ्रेंड सर्किल में कि वे लोग बहुत आगे चले जा रहे हैं और मेरी शादी अचानक से कम उम्र में हो गयी। और ससुराल में बड़ी बहु के रूप में कुछ ज्यादा जिम्मेदारियां मिलने लगीं तो मुझे लगा कि अब नहीं पढ़ पाएंगे। लेकिन फैमली का सपोर्ट मिला और मैंने पटना यूनिवर्सिटी से पी.जी. किया, फिर बीएड हुआ। इकोनॉमिक्स में पीएचडी हुआ। आज जो भी डिग्री लेकर हम यहाँ बैठे हुए हैं वो सब शादी के बाद लिया हुआ

है तो ऐसा कुछ नहीं होता जैसा लोग बोलते हैं कि शादी के बाद पढ़ाई नहीं होती है। हाँ परेशानी होती है, घर देखना, बच्चे को देखना और पढ़ाई करना लेकिन ससुराल में रहते हुए बिना ससुरालवालों के सपोर्ट से यह मुमकिन नहीं है।

एक मजेदार वाक्या हुआ था शादी के वक्त। मेरे हसबेंड थोड़े संकोची किस्म के हैं। बहुत ज्यादा किसी के साथ बैठकर बात करना–हंसना नहीं होता है। तो कभी–कभी वे बहुत ज्यादा रिएक्ट कर जाते थें। शादी के दिन भी ये नाराज हो गए थें जब द्वार छेंकाई की रस्म हो रही थी। उस रस्म में जैसे ही उनके साथ धक्का–मुक्की हुई वे इतना जोर गुस्साएं कि डर से सारे लोग पीछे हट गएँ। उनको मेरे मायके जाने के बाद बहुत प्रॉब्लम होती थी कि जबरदस्ती लोग इनके मुँह में ऊँगली डालकर बुलवाते थें। ये सब सुनहरी यादें जब ताजा होती हैं तो सच में बड़ी ही मजेदार लगती हैं।

नृत्य एवं साहित्य में मेरी रूचि बचपन से रही है। मेरी एक भोजपुरी कविता की पुस्तक 'मन' शीर्षक से प्रकाशित हो चुकी है। उसी पुस्तक की एक कविता बहुत दिनों तक आरा के वीर कुंवर सिंह यूनिवर्सिटी में ग्रेजुएशन में पढ़ाई गयी है। एक बार जब बोकारो (झाड़खंड) में भोजपुरी काव्य सम्मलेन हुआ जिसमे मुझे शामिल होने का मौका मिला था। बहुत बड़े–बड़े कवियों का जमावड़ा लगा हुआ था। तब 1994 में तुरंत ही मेरी शादी हुई थी। तब मेरी बेटी बहुत छोटी सी थी। उस समय मैं हसबेंड के साथ वहां काव्य सम्मलेन में भाग लेने पहुंची थी। जब वहां लोगों ने मुझे बिहार की बेटी और बिहार की

महादेवी के नाम से सम्बोधित किया तो बहुत अच्छा लगा। एक कविता मैंने शादी के बाद लिखी थी 'चुटकी भर सेनुर', जिसमे था कि सिंदूर से किस तरह एक लड़की की लाइफ चेंज हो जाती है। शादी के पहले तब के एक नेशनल लेवल के बड़े साहित्यकार विधा निवास मिश्र के हाथों मुझे कविता के लिए उपाधि भी मिली थी।

शादी के बाद पढ़ाई तो जारी रही लेकिन कविता के साथ जो मेरा रिलेशन था वो लगभग खत्म हो गया। क्यूंकि तब घर से स्कूल और स्कूल से घर के दरम्यान परिवार को देखते हुए उतना वक्त ही नहीं मिल पाता था। इधर कविता लेखन का वही शौक अब जाकर फिर से जवां हुआ है। सबसे बड़ी बात होती है ससुराल में एक लड़की को आकर एडजस्ट करना। तो मुझे ससुराल में एडजस्टमेंट में परेशानी नहीं हुई। तब सबसे मजेदार वाक्या ये हुआ कि चूँकि मेरे पति बड़े लड़के थें तो घर की पहली शादी थी। मेरे ससुर जी थोड़े स्ट्रीक्ट नेचर के थें। उन्हें पसंद नहीं था बाहर में स्टेज बनाना और रिसेप्शन में सबके सामने दुल्हन को बैठाना। लेकिन सबको आश्चर्य हुआ जब उन्होंने बहुत शौक से स्टेज बनवाया, उसको सफेद सुगन्धित फूलों से सजवाया। सब अचरज में थें कि आखिर हुआ क्या कि इतना चेंज आ गया। आज वे हमारे बीच नहीं हैं बस उनकी यादें हैं। और एक चीज उनकी बहुत अच्छी लगती थी कि जब एक छोटी–सी भी डिग्री मेरी आती थी या मेरे बच्चों का कुछ एचीवमेंट होता था वे सबसे पहले जाकर पास के मिठाई दुकान से रसगुल्ला ले आते थें और कहते थें कि "मुंह मीठा कर लो।" तो यह देखकर अंदर से बहुत मानसिक संतोष मिलता था कि चलो एक पिता की तरह उनसे हमे प्यार मिल रहा है। जब घर में मेरी बच्ची बहुत छोटी थी और मैं मास्टर डिग्री कर रही थी तब दिन में घर में ज्यादा काम हो जाता था। काम को निपटाना, अपनी पढ़ाई करना फिर बेटी को देखना और कभी–कभी उसके रोने की वजह से रातभर जगे रह जाना ऐसे में थोड़ी परेशानी हो जाती थी लेकिन सबके सपोर्ट से वो दौर भी अच्छे से निकल गया। आज बच्चे बड़े हो गएँ हैं। बड़ी बेटी और बेटा दोनों आर्किटेक्ट हैं। बेटी की शादी करके थोड़ी निश्चिंत हो चुकी हूं। अब पुराने दिनों को याद करती हूं तो लगता है कि कैसे वो समय इतनी जल्दी बीत गया। ❐

तब मर्दों के प्रति इतना आक्रोश था कि पुलिस सर्विस ज्वाइन कर सबको सबक सिखाना चाहती थी :

मधु श्रीवास्तव, एडवोकेट, पटना हाईकोर्ट

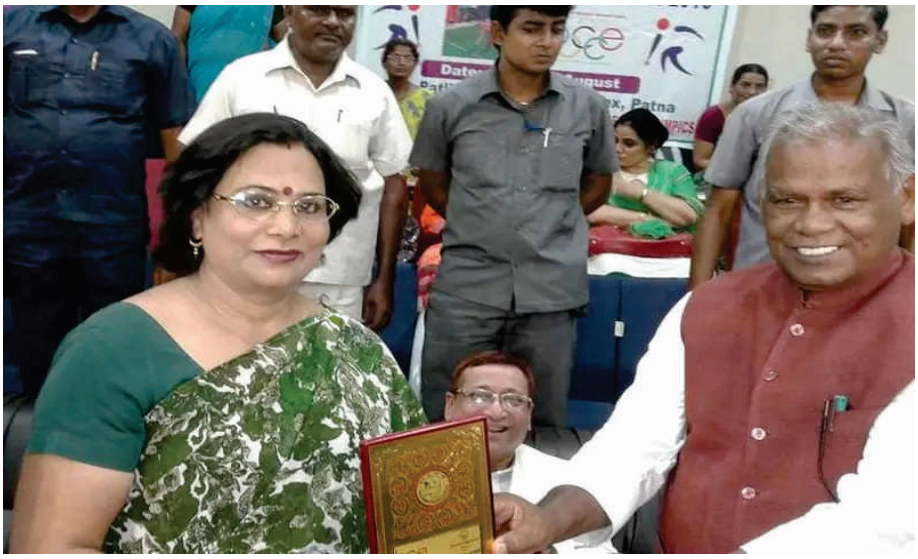

ग्रेजुएशन करने के बाद मेरी शादी 1987 में एक बहुत बड़े घर में हुई थी। उस वक्त दहेज की कोई बात नहीं थी मगर वहां जाने के बाद पता चला कि ससुरालवालों की नियत बहुत खराब है। वहां फिजकली से ज्यादा मुझे मेंटली टॉर्चर किया जाता था। उनका उद्देश्य था कि मुझे पागल करके, डायवोर्स देकर घर से निकाल दो। बात इतनी बढ़ने लगी कि हम बहुत बीमार हो गएँ। थाना–पुलिस और कोर्ट–कचहरी तक मामला पहुँच गया। तब शादी को एक साल भी नहीं बिता था। फिर 7–8 महीने में ही मेरा रिश्ता खराब हो गया और मुझे माँ–बाप के पास लौटना पड़ा। लेकिन फिर भी उस समय मैं डायवोर्स नहीं लेना चाहती थी लेकिन जब मेरी हालत बहुत दयनीय हो गयी तो मेरे माँ–पापा मुझे दिल्ली से पटना ले आएं। वे मेरा इलाज करवाएं तब हम नॉर्मल हुए। उसके बाद मेरा नया जन्म हुआ और इलाज के बाद हम एक नयी मधु बन गए। उस बीच डायवोर्स का केस फाइल हो गया था। फिर मैंने लॉ की पढ़ाई शुरू की। उस घटना के बाद मेरे मन में पुरुषों के प्रति इतना आक्रोश था कि लगता था जो मेरे साथ किया गया है, हम भी उनको सजा दें। उस वक्त पुलिस सर्विस में जाना चाहती थी क्यूंकि लगता था कि पुलिस में गए तो वैसे मर्दों की बहुत पिटाई करेंगे। लेकिन माँ नहीं चाहती थी कि मैं पुलिस सर्विस ज्वाइन करूँ तब फिर मैं लॉ की पढ़ाई में व्यस्त हो गयी। क्यूंकि इसके माध्यम से भी हम दूसरों को न्याय दिला सकते हैं।

लॉ पढ़ने के बाद मैंने वकालत शुरू की और अब मैं पीड़ित महिलाओं के लिए संघर्ष करती हूँ। तब मेरे पापा और बड़े जीजाजी के सपोर्ट से हम फिर से अपने पैरों पर खड़ा होना शुरू किये थें। इसी बीच घर में बात चलने लगी कि लड़की कबतक रहेगी घर में ? इसकी फिर शादी करनी है। तबतक मेरे छोटे भाई–बहन की शादी हो गयी थी। उस वक्त मैं दुबारा शादी ही नहीं करना चाहती थी। लेकिन पापा–माँ को लगा कि हमलोग नहीं करेंगे तो कैसे रहेगी अकेले। तो उनकी जिद थी की नहीं, शादी होनी चाहिए। तब मेरी दूसरी शादी एक बंगाली फैमली में हुई और उस मैरेज के बाद मेरी एक बेटी हुई। संयोग देखिये कि ये शादी भी मुश्किल से 5–6 साल ही टिक पायी। क्यूंकि उनलोगों को मेरा सोशल वर्क करने से लेकर मेरा ऐटीच्यूट, रहन–सहन कुछ भी पसंद नहीं आता था। वो रईस परिवार के थें और रात–दिन शराब और ऐय्यासी में डूबे रहते थें। वे हमारी कुछ केयर नहीं करते थें। उनकी इक्छा थी कि हम घर में बंद होकर रहें। इस हालात में हम पहले के मिले अनुभव से स्ट्रॉन्ग हो चुके थें और हम घर में बंद होकर नहीं रह सकते थें। अब मुझे बाहर निकलना था, काम करना था। लेकिन वो इजाजत नहीं देते थें। मुझे बिहारी बोलकर बहुत अपमानित करते थें। फिर मैं 2000 में कोलकाता से वापस पटना मायके आ गयी। पटना में बेटी का एडमिशन कराएं और फिर से वकालत करना शुरू कर दिए। उसके बाद फिर ससुरालवालों ने हमें पलटकर देखा तक नहीं और ना किसी भी तरह से कोई हेल्प किया। उल्टा मुझपर ही दोष मढ़ दिया गया कि हम अपने पति के साथ नहीं रहना चाहते हैं। वो ऐय्यास टाइप के थें जो अपना सारा पैसा शराब में बर्बाद कर रहे थें। वे बेटी की परवरिश या मेरी देखभाल नहीं कर पाएं। तब माँ–पापा को को ही हम दोनों की देखरेख करनी पड़ती थी तो फिर मेरा पति के साथ रहना सम्भव नहीं था। तभी हम डिसीजन लिए और मायके आ गए। तब अपनी बेटी को बहुत स्ट्रगल से पढ़ाने लगें। लेकिन मेरे भाई–बहन, माँ–बाप का अच्छा सपोर्ट था कि मेरी लाइफ अच्छी गुजरने लगी। इसी बीच हम सोशल वर्क शुरू कर

दिए।

मैंने 80 के दशक में बहुत सारे बाइक रैली में भाग लिया। बिहार की पहली महिला होने का गौरव प्राप्त किया और बहुत सारे एवार्ड जीते। ऐसा करते–करते मेरी हिम्मत बढ़ती गयी। पहली बाइक रैली 1992 में हुई थी जिसमे 70 प्रतिभागी थें। बिहार के अलावा अन्य स्टेट से भी आये थें और उस ग्रुप में मैं एक अकेली महिला थी। उस समय एल.एम.एल. कंपनीवाले मुझे सपोर्ट किये थें तो उन्ही की कम्पनी के स्कूटर एल.एम.एल. वेस्पा से हम रैली में भाग लिए। होटल मौर्या पटना से स्टार्ट कर हम सभी मुजफ्फरपुर गए थें और फिर मुजफ्फरपुर से तुरंत वापस भी आना था। फिर 2007 में भी हम पहली महिला बने जो रैली में मोटरसाइकिल से बिहटा तक गए। जब लड़कियां सायकिल भी बहुत कम चलाती थीं तब हम पापा की बाइक से कॉलेज जाते थें और रेडक्रॉस सोसायटी में बाइक छुपाकर रखते थें। उस समय मेरे बाइक चलाने पर भीड़ लग जाती थी। तब कॉलेज में कोई लड़की स्कूटर–बाइक नहीं चलाती थी तो कॉलेज जाने पर हंगामा मच जाता था। यहाँ तक कि टीचर–लेक्चरर और सड़क पर भी ट्रैफिक पुलिस सभी भीड़ लगाकर देखने लगते थें जैसे उनके लिए यह एक अजूबा हो। जब मेरी पहली रैली थी तब भी रोड के दोनों किनारे हजारों पब्लिक खड़ी थी देखने के लिए कि कौन लड़की बाइक चला रही है। तब मेरे मोहल्ले के लोग भी पापा को ताने मारते थें कि अपनी लड़की को हवा में उड़ा रहे हैं, आवारा बना रहे हैं। लेकिन पापा सुनते नहीं थें, हमको भी ध्यान नहीं देने को कहते थें। जब हम बाइक रैली जीतकर आएं तो वो ताना मारनेवाले सभी लोग तारीफ करने लगें और मेरे पास आकर कहने लगें कि मेरी बेटी को भी सीखा दो।

जब मैं हसबैंड से अलग होकर सिंगल मदर पैरेंट्स की तरह रहने लगी फिर भी डायवोर्स नहीं ली, वजह ये कि इस समाज में लोग डायवोर्सी औरत को अच्छी नजर से नहीं देखते हैं। और जिस जगह

हम जॉब करते थें शुरू के दिनों में वहां पर पता चलते ही कि हम अकेले हैं हर–एक लोगों का नजरिया बदल जाता। क्यूंकि समाज की सच्चाई यही है कि अकेली औरत को सभी अपनी प्रॉपर्टी समझने लगते हैं। उस वक्त मुझे लगा कि नहीं, कम–से–कम एक झूठा ही नाम का सिंदूर–मंगलसूत्र तो है जो समाज में एक कवच का काम कर रहा है। कल को बेटी की शादी में भी दिक्कत आ सकती थी। तब मेरे पापा थोड़ा– सा समाज के तानों से घबरा गए थें लेकिन मेरी माँ बिल्कुल नहीं डरी और उसने कहा कि 'मेरी बेटी यहीं रहेगी, जिसको प्रॉब्लम है वो चला जाये।' माँ सबसे लड़कर मेरा सपोर्ट की और बोली– "मेरी बेटी है, हम इसको मरने नहीं देंगे।" उसके बाद तो फिर पूरी फैमली का सहयोग मिलने लगा। मम्मी–पापा बहुत हिम्मत दिए उस समय जब लगता था कि जिंदगी में कुछ नहीं है, अँधेरा ही अँधेरा है। मर जाने की इच्छा होती थी। उस वक्त पापा की सीख मेरे पल्ले पड़ी तो आज हम दूसरों का भी उत्साह बढ़ाते हैं कि कभी भी भगवान एक रास्ता बंद करते हैं तो एक रास्ता जरूर खोल देते हैं। और हिम्मत हारकर बैठ जाना जिंदगी का मकसद नहीं है।

मैं कुछ संस्थाओं से जुड़ी जिसके माध्यम से हफ्ते में एक–दो दिन स्लम के बच्चों को जाकर पढ़ाती हूँ। बिहार सिविल सोसायटी फोरम संस्था जो मानव अधिकार हनन के मुद्दे पर काम करती है जिसकी मैं अभी सेक्रेटरी हूँ। 'तलाश' संस्था की मेंबर हूँ। 'समर्पण' से जुड़कर दिव्यांग बच्चों के लिए भी काम करती हूँ। जो इनलीगल कंस्ट्रक्शन करके सोसायटी में हॉस्पिटल–नर्सिंग होम बनवाते थें उनके खिलाफ भी हम पीआईएल किये। इसमें भी कोई मेरा साथ नहीं दिया और हम अकेले 6 साल लड़ाई लड़ें और तब मुझे डॉक्टर्स लोगों से बहुत धमकी भी मिली लेकिन अंत में हम लड़ते–लड़ते रेसिडेंसियल इलाके में कुछ इनलीगल ढंग से चल रहे हॉस्पिटल बंद करवाए।

जब मैं शुरू–शुरू कोर्ट में वकालत करने गयी तो उस समय लड़कियां कम थीं, जेंट्स के बीच काम करने में झिझक होती थी। सभी सीनियर्स अच्छे होते भी नहीं हैं, लेकिन मेरा संयोग था कि मुझे अच्छे सीनियर्स मिल गएँ। मेरी बेटी पटना वीमेंस कॉलेज से बी.कॉम कर चुकी है। बेटी कत्थक की अच्छी डांसर भी है। मुझे भी डांस का शौक था मगर हम कर नहीं पाएं तो बेटी के माध्यम से अपना शौका पूरा कर पा रहे हैं। मेरी बच्ची जब कुछ समझदार हुई तो उसे लगता था मम्मी गन्दी है, पापा के साथ लड़ाई की है। लेकिन हम उसे कभी मना नहीं किये, फोन नंबर दे दिए तो वो अपने डैडी से बात करती थी। लेकिन जैसे–जैसे वह बड़ी होती गयी उसको पता चल गया कि मम्मी को उनलोगों ने कितना परेशान किया। अब वे उनलोगों से बात भी नहीं करना चाहती। अब फोन आता है तो काट देती है। उस समय अगर किसी मर्द से मैं दोस्ती भी करती तो मेरी बेटी पर उसका बहुत खराब असर पड़ता। तो काफी बैलेंस करते हुए मुझे जिंदगी आगे बढ़ानी पड़ी और बेटी को लायक बनाना पड़ा। आज मेरी बेटी मुझसे भी ज्यादा स्ट्रॉन्ग बन गयी है।

❐

पुष्पा 2 का ट्रेलर पटना के गांधी मैदान में हुआ लॉन्च

पटना ब्यूरो, 17 नवंबर को बिहार की राजधानी पटना के गांधी मैदान में साउथ की मूवी पुष्पा 2 का ट्रेलर लॉन्च हुआ। साउथ इंडस्ट्री के सुपरस्टार अभिनेता अल्लू अर्जुन और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना की एक झलक को लेकर गांधी मैदान में फैंस का हुजूम उमड़ पड़ा। इस दौरान भीड़ बेकाबू हो गई। वहीं, भीड़ को नियंत्रित करने के लिए बिहार स्पेशल आर्म्ड पुलिस को लाठी चलानी पड़ी, कई बैरिकेड भी टूट गए ।

फिल्म दीवानों का आलम ये कि अपने चहेते फिल्म सितारों को देखने के लिए वहीं लगे वॉच टावर पर चढ़ गए।

अल्लू अर्जुन ने फिल्म 'पुष्पा 2: द रूल' के ट्रेलर रिलीज के दौरान लाखों की भीड़ में स्टेज पर आते ही पटना, बिहार के फैंस का शुक्रिया अदा करते हुए अपनी ही स्टाइल में कहा, ''पुष्पा कभी किसी के आगे झुकता नहीं, लेकिन आज पटनावासियों का अपार प्रेम व उत्साह देखकर पुष्पा खुद आज झुक गया।'' ❐

पोखरा-01

अद्भुत है नेपाल का पोखरा

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

अपने नयनाभिराम सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध नेपाल पर्यटकों को एक अद्भुत अहसास प्रदान करता है। हिमालय के उत्तुंग शिखरों के मनमोहक दृश्य, पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों के नजारे और वन्यप्राणियों की कल्लोल क्रीड़ाओं का जादू बरबस ही मन को मोह लेता है। नेपाल एक ऐसा देश है, जहां पूरे साल विश्वभर से पर्यटकों की आवाजाही लगी रहती है। नेपाल की राजधानी और ऊंचे पहाड़ों की गोद में बसा इसका सबसे बड़ा शहर काठमांडू है।

वैसे तो नेपाल को मुख्य रूप से ट्रैकिंग और पर्वतारोहण गंतव्य के रूप में जाना जाता है, पर इसके शांत वातावरण में आस्था और उपासना की मंद मंद अनुगूंज भी सर्वत्र सुनाई देती है। यहाँ वह सब कुछ है, जिसकी तमन्ना एक पर्यटक को होती है। देवताओं का घर कहे जाने वाला नेपाल विविधताओं से भरा है। भौगोलिक विविधता की बातें करें तो यहाँ तराई के उष्ण कटिबंधों से लेकर ठण्डे हिमालय की लंबी श्रृंखला अवस्थित है। विश्व की सबसे ऊँची चौदह हिम श्रृंखलाओं में से आठ, नेपाल में हैं, जिसमें संसार का सर्वोच्च शिखर ''सागरमाथा एवरेस्ट'' (नेपाल और चीन की सीमा पर) भी एक है।

घूमने की दृष्टि से तो पूरा नेपाल ही दर्शनीय है, पर यहां की सबसे खूबसूरत जगह है पोखरा, जिसके अन्दर ही बहुत सारे दर्शनीय स्थल हैं– जैसे फेवा झील, महेन्द्र गुफा, डेविस फॉल, गुप्तेश्वर महादेव गुफा, मनोकामना मंदिर, सारंगकोट सूर्योदय प्वायंट आदि । इसके अलावा नेपाल में कुछ अन्य आश्चर्यजनक स्थल हैं, जहां गए बिना आप रह नहीं सकते। इनमें कुछ महत्वपूर्ण हैं– रारा झील, खप्ताद राष्ट्रीय उद्यान, पंच पोखरी, घोर पानी पून हिल ट्रेक, चितवन राष्ट्रीय उद्यान, गोसाईकुंड झील, जनकपुर धाम, लुम्बिनी, मुक्तिनाथ, ककनी, गोसाईं कुण्ड, धुलीखेल, रॉयल चितवन राष्ट्रीय उद्यान, चाँगुनारायण मन्दिर, भक्तपुर दरबार स्क्वैयर, स्वर्ण द्वार, बोधनाथ स्तूप और विश्वप्रसिद्ध पशुपतिनाथ मन्दिर।

नेपाल में काठमांडू के बाद दूसरा सबसे बड़ा शहर पोखरा माना जाता है। नेपाल के मध्य में स्थित यह शहर अपने शांत वात्तावरण और अनूठे परिवेश के लिए अति प्रसिद्ध है। पोखरा में इसकी मुख्य प्रसिद्धि का कारण फेवा झील है, जिसकी चारों तरफ यह पूरा शहर घुमावदार बसा हुआ है। लेकसाइड की बात करें तो पोखरा में अनेक दुकानें, आकर्षक कैफे, रेस्टोरेंट और एक नौका विहार वंडरलैंड भी है। शहर के व्यापारिक केंद्र पुराने पोखरा में स्थित हैं, जो कई आश्चर्यजनक मध्ययुगीन मंदिरों का भी घर है।

एक किंवदंती के अनुसार पोखरा कभी देवताओं का बगीचा था। ऐसा कहा जाता है कि देवी–देवताओं ने

पोखरा का निर्माण इसलिए किया था, ताकि वे दिनभर काम के उपरांत सेवा झील में डुबकी लगाकर आराम कर सकें। वैसे देखा जाए तो पोखरा आराम करने वालों और रोमांच की चाह रखने वालों दोनों के लिए सबसे पसंदीदा जगहों में एक है। यहां कई रोमांचक खेल हैं जैसे, पैराग्लाइडिंग, नौकायन और रिवरराफ्टिंग के अलावा पोखरा में ट्रैकिंग के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होते हैं। दर्शनीय स्थलों की बात करें तो पोखरा का फेबा झील अपने आप में एक आकर्षण है। इसके अलावा यहां का शांति स्तूप, डेविस फॉल, गुप्तेश्वर महादेव गुफा, विंध्यवासिनी मंदिर, मनोकामना मंदिर, सारंगकोट आदि अनेक पर्यटक स्थल हैं, जहां वर्षभर पर्यटकों की भीड़ जमा रहती है।

पर्यटन केन्द्र होने के साथ साथ पोखरा पश्चिमांचल विकास क्षेत्र का शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यापार का केन्द्र भी है। पोखरा विश्वविद्यालय यहीं स्थित है। पश्चिम नेपाल का सबसे प्रसिद्ध कैम्पस पृथ्वीनारायण कैम्पस यहीं स्थित है।

पोखरा में आधुनिक संचार के साधनों जैसे इमेल, इन्टरनेट, प्रीपेड, पोस्टपेड मोबाइल, लोकल एसटीडी, आइ.एस.डी फोन सुविधा के साथ–साथ, रेडियो नेपाल का पश्चिमांचल प्रसारण केन्द्र, चार प्राइवेट एफ.एम रेडियो भी संचालित हैं।

पोखरा में एक डोमेस्टिक एयरपोर्ट है। अब इसे अन्तरराष्ट्रीय विमानस्थल बनाने का प्रयास हो रहा है। अभी यहां से काठमाण्डू, भरतपुर तथा जोमसोम तक की उड़ान उपलब्ध है। पोखरा से दिल्ली तक की सीधी बस सेवा भी उपलब्ध है।

नेपाल पहुंचने के बाद पोखरा मेरा पहला पड़ाव था। उसके लिए मेरे मित्र श्री विजय कोइराला अपने घर के निकट 'कलंकी बस स्टैंड' मुझे पहुंचा आये, जहां से मुझे एसी बस पोखरा ले जाने वाली थी। ये कलंकी मुख्य बस स्टैंड नहीं है, लेकिन यह शहर का आखरी स्टॉप है, जिसके बाद पहाड़ और घाटियां शुरू होती हैं। एक तरह से कहना चाहिए कि कलंकी काठमांडू का प्रवेशद्वार है। मैं भी बस में सवार हो गया, बस चल पड़ी और मैं रास्ते के मनोरम दृश्यों में खोता चला गया।

रास्ते में एक स्थान पर भोजन के लिए बस को रोका गया। संभवत उस स्थान का नाम धमोली था। आसपास इतना मनोरम दृश्य था कि यहां से हटने का मन ही नहीं कर रहा था। चारों ओर ऊंचे ऊंचे पहाड़ और उसकी गोद में थिरकती बलखाती नदी। यहां भोजन कर हम आगे बढ़े।

रास्ते में जगह–जगह पहाड़ से टूटकर गिरे हुए पत्थर दिखाई दिए। कई जगह सड़कों पर काम चल रहा था और यह सब दृश्य काठमांडू से लेकर पोखरा के रास्ते तक रुक–रुक के हमें मिलता रहा। कई बार बस एक ही स्थान पर एक–एक घंटे तक रुकी रही और पोखरा तक की जो दूरी चार या पांच घंटे में पूरी करनी थी, उसे पूरी होने में 10 से 11 घंटे लग गए।

पोखरा पहुंचा तो शाम ढल रही थी। यहां विजय कोइराला जी ने इतनी अच्छी व्यवस्था कर रखी थी कि बस स्टैंड से होटल तक मुझे ले जाने के लिए वहां की कार आई और होटल ''ग्लोरी गार्डन'' पहुंचने पर मेरा स्वागत उसके मालिक भरत जी ने किया।

वैसे तो लंबे सफर के बाद आराम करने की इच्छा हो रही थी, पर मुझे लगा कि अभी अंधेरा पूरी तरह से हुआ नहीं है तो थोड़ा आसपास झील का नजारा कर लिया जाए.... तो मैं झील की तरफ निकल गया और वहां के कुछ दृश्यों को अपने कैमरे में कैद कर लिया। अब शाम का अंधेरा बढ़ने लगा था। सड़कों पर बहुत कम लोग दिखाई दे रहे थे, हालांकि दुकानें सारी खुली थीं। मैं होटल वापस लौट आया और पूरी तरह आराम किया।

दूसरे दिन होटल से ही एसी बस द्वारा पोखरा घुमाने की व्यवस्था की गई थी। सुबह आठ बजे के आसपास मैं बस में सवार हो गया, जिसमें मेरे अलावा अन्य लोग भी थे, जो अलग–अलग स्थानों से आकर अलग–अलग होटलों में ठहरे थे। वह बस हमें दिनभर पोखरा और उसके आसपास के दर्शनीय स्थलों तक ले जाने वाली थी। बस चल पड़ी। हमारे साथ गाइड के तौर पर स्मिता थीं जो अपने अंदाज में क्या करना है और क्या नहीं करना, यह सब बत्ताती जा रही थीं। उनके इस कठोर अनुशासन को हम भी मानने के लिए एक तरह से विवश थे। और स्मिता गाइड की निगरानी में हम पोखरा के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने में तल्लीन हो गए। सबसे पहले हम पहुंचे गुप्तेश्वर महादेव गुफा।

गुप्तेश्वर महादेव गुफा

पोखरा में गुप्तेश्वर महादेव गुफा एक अलग तरह का पर्यटन स्थल है। इस गुफा को नेपाल की सबसे लंबी गुफा माना जाता है जिसकी लंबाई 2950 मीटर है। यह कहा जाता है कि इस गुफा की खोज सोलहवीं शताब्दी में हुई थी। किंवदन्तियों के अनुसार एक पुजारी ने एक विशाल गर्भ जैसी गुफा में भगवान शिव और उनकी पत्नी मां पार्वती की एक काली मूर्ति की खोज की थी, जिसमें एक नाग की रक्षा करते हुए एक ही आकृति में पुरुष और महिला दोनों रूपों में भगवान शिव और माता पार्वती की मूर्ति मानते हैं। गुप्तेश्वर महादेव की मुख्य गुफा में दो कक्ष हैं, जिनमें भगवान शिव, माता

पार्वती, नागेश्वर और सरस्वती मां जैसे विभिन्न हिंदू देवी–देवताओं के मंदिर और मूर्तियां हैं। यहां नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी थीं। आसपास दुकानें सजी हुई थीं। टिकट काउंटर से टिकट ले हम भी नीचे सीढ़ियों की तरफ चल पड़े। हमारा कैमरा आसपास और गुफा के दृश्यों को कैद करने में लगा हुआ था।

नीचे तकरीबन 100 सीढ़ियां उतरकर हम गुफा के इस मुख्य प्रवेश द्वार तक पहुंचे। अंदर गुफा में काफी सीलन थी और छत से पानी टपक रहा था। किसी तरह कैमरे को बचाते हुए मैं अंदर प्रवेश कर गया। यहां रौशनी तो थी, लेकिन वह रौशनी गुफा को आलोकित करने के लिए पर्याप्त नहीं थी।

वहां तस्वीर खींचने और वीडियो बनाने की मनाही थी। जहां तक संभव था वहां तक हमने कोशिश की कि कुछ छवियां उतर जाएं, कुछ दृश्य कैद कर लिये जायें, लेकिन मनाही थी इसलिए एक सीमा से परे जाकर मैं रुक गया। जितनी सीढ़ियां नीचे मैं उतरा था, वापसी में उतनी ही चढ़नी भी थी, जो अब कष्टसाध्य प्रतीत हो रहा था। फिर भी ठहर–ठहर कर सारी सीढ़ियां चढ़ मैं ऊपर आ गया।

सड़क की दूसरी तरफ डेविस फॉल है ऐसा हमारी गाइड ने बताया था और चेतावनी दी थी कि डेविस फॉल देखकर सभी बस में आ जायें। इसके लिये आधे घंटे का समय मिला था हमलोगों को.... खैर.....।

डेविस फॉल

हम सड़क पार कर डेविस फॉल की ओर बढ़ चले। डेविस फॉल को हिंदी में अगर कहें तो ''देवी का झरना'' कह सकते हैं। हालांकि कुछ लोग यह कहते हैं कि इस झरने का नाम डेविस नाम की एक स्विस महिला के नाम पर रखा गया, जिसके बारे में यह माना जाता है कि वह खेलते समय यहां पानी में डूब गई थी। फिर भी, किंवदन्तियां चाहे जो हों, पर यह झरना देखने लायक है। यह डेविस फॉल फेबा झील के बांध से पानी प्राप्त करता है इसलिये इसके आसपास के क्षेत्र में काफी हरियाली है। झरने में इस समय उतना पानी नहीं था। कहा जाता है कि यह झरना जमीन के नीचे एक सुरंग बनाता है, जो इसके आधार तक 500 फीट तक लगभग फैली हुई है। यह वह जगह है जहां 'पार्डी खोला धारा' नामक झरना इसमें समाहित हो जाता है। यही कारण है कि इस झरने को नेपाली में पाटले चांगो के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ होता है– भूमिगत झरना।

शांति स्तूप

पोखरा का 'शांति स्तूप' भी काफी प्रसिद्ध है जो कि एक बौद्ध स्मारक है। इसका निर्माण निप्पॉनजन मायोहोजी भिक्षु मोरियोका सोनिन ने स्थानीय समर्थकों के साथ बौद्ध भिक्षु और निप्पॉनजन–गायोहोजी के संस्थापक निचिदात्सु फूजी के मार्गदर्शन में किया था। अनाडु पहाड़ी पर 1100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित निचिदात्सु फूजी ने 12 सितंबर, 1973 को बुद्ध के अवशेषों के साथ इसकी आधारशिला रखी थी। यह दुनिया के 80 शांति स्तूपों में से एक है।

शांति स्तूप तक पहुँचने के अनेक रास्ते हैं। पैदल यात्रा के रास्ते, साइकिलिंग ट्रैक और पक्की सड़कें आपको शांति स्तूप तक ले जाती हैं। एक बार जब आप शीर्ष पर पहुँच जाते हैं, तो आपको वहां से अन्नपूर्णा पर्वत और फेवा झील के किनारे पोखरा शहर का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। इस स्थान की सुरम्यता और सुंदरता मनभावन है और स्मारक का शांत वातावरण शांति चाहने वालों के लिए अद्भुत है।

क्रमशः– अगले अंक में पोखरा के कुछ और दर्शनीय स्थल....

(सभी छायाचित्र लेखक के स्वत्वाधिकार में हैं)

माहिका शाह और शरद मल्होत्रा ने 'अधूरी दास्तान' म्यूजिक वीडियो में प्यार को जीवंत किया

मुंबई ब्यूरो, माहिका शाह ने वीनस म्यूजिक कंपनी वोइला डिजी प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत प्यार व पुनर्मिलन की कहानी पर केंद्रित हिंदी म्यूजिक वीडियो अधूरी दास्तान में अपने शानदार डेब्यू से सुर्खियां बटोरी हैं। मोहसिन खान द्वारा निर्देशित इस वीडियो में माहिका और टेलीविजन के दिलों की धड़कन शरद मल्होत्रा ने उत्तराखंड के हर्षिल के मनमोहक परिदृश्यों के बीच प्यार और लालसा की कहानी बुनी है। अपनी खूबसूरत सेटिंग और दिल को छू लेने वाली कहानी के साथ, यह गाना पहले ही दर्शकों के दिलों में गूंजने लगा है और हवा में प्यार की नई खुशबू बिखेर रहा है।

हाल ही में रिलीज हुए इस म्यूजिक वीडियो में एक लड़के की कहानी बताई गई है जो अपने गृहनगर में वापस आता है और एक लड़की के साथ अपने बचपन की यादों को ताजा करता है। यह कहानी उनके बचपन के पलों से लेकर वर्तमान में भावनात्मक पुनर्मिलन तक सहजता से आगे बढ़ती है, जो एक खूबसूरत नॉस्टैल्जिक और रोमांटिक अनुभव बनाती है।

अपने डेब्यू के बारे में बताते हुए, माहिका शाह ने कहा, ''अधूरी दास्तान'' की शूटिंग करना एक अविस्मरणीय अनुभव था। हर्षिल की सुंदरता कहानी का एक अभिन्न अंग बन गई, जिसने गाने की भावनाओं को और बढ़ा दिया। मोहसिन खान के दूरदर्शी निर्देशन में इस तरह के खूबसूरती से तैयार किए गए प्रोजेक्ट के साथ डेब्यू करना और शरद मल्होत्रा के साथ स्क्रीन शेयर करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उनके सहयोग से मुझे भूमिका में ढलने में मदद मिली और साथ मिलकर हम इस दिल को छू लेने वाली कहानी को जीवंत करने में सफल रहे।

निर्देशक मोहसिन खान ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, 'अधूरी दास्तान' मेरे दिल के करीब एक प्रोजेक्ट है। हर्षिल की प्राकृतिक सुंदरता ने म्यूजिक वीडियो में गहराई और आकर्षण जोड़ा। माहिका ने स्क्रीन पर नई ऊर्जा और शरद के अनुभवी प्रदर्शन ने सही संतुलन बनाया। साथ मिलकर, उन्होंने गाने के विजन को जीवंत कर दिया और मैं वीडियो के बनने के तरीके से रोमांचित हूं। शरद मल्होत्रा ने भी प्रोजेक्ट पर अपने विचार साझा करते हुए कहा, 'अधूरी दास्तान' पर काम करना एक यादगार अनुभव था। गाने की कहानी, प्राकृतिक सुंदरता और उसमें समाहित भावनाएं इसे वाकई खास बनाती हैं। माहिका ने इस भूमिका में एक नया नजरिया पेश किया और उनके समर्पण और उत्साह ने साथ मिलकर काम करना एक खुशनुमा एहसास बना दिया।

वीडियो में माहिका ने पांच अलग–अलग लुक में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया और गाने की भावनात्मक गहराई को और भी बेहतर बनाया। उनका शानदार प्रदर्शन, शरद मल्होत्रा के आकर्षण और हर्षल की प्राकृतिक भव्यता के साथ मिलकर संगीत वीडियो के दृश्य और भावनात्मक आकर्षण को बढ़ाता है।

हर्षिल की प्राकृतिक भव्यता के साथ मिलकर मधुर ट्रैक संगीत, प्रदर्शन और प्रकृति की सुंदरता का एक बेहतरीन सामंजस्य बनाता है। वोइला डिजी प्राइवेट लिमिटेड ने सुनिश्चित किया है कि अधूरी दास्तान स्पॉटिफाई, जियोसावन, यूट्यूब म्यूजिक, एप्पल म्यूजिक, अमेजन म्यूजिक और गाना पर उपलब्ध है, जिससे यह हर जगह दर्शकों के लिए आसानी से उपलब्ध हो सके।

शरद मल्होत्रा की चुंबकीय उपस्थिति के साथ माहिका शाह का शानदार डेब्यू पहले से ही धूम मचा रहा है। अधूरी दास्तान अपने दिल को छू लेने वाली कहानी, मनमोहक अभिनय और मनमोहक दृश्यों के साथ एक स्थायी छाप छोड़ने का वादा करती है। ❐

बाल कहानी

सांता क्लॉज की चिट्ठी

क्रिसमस के एक दिन पहले शाम के वक्त मोनू अपने जूते में पॉलिश दे रहा था। मोनू के भैया ने उससे पूछा जब कल स्कूल बंद है तब जूता क्यों चमका रहे हो इस पर मोनू ने भोलेपन से जवाब दिया – जो बच्चा अपने जूते में एक पर्ची जिसमें अपनी पसंद का कोई गिफ्ट लिखा होता है उसे डाल देता है तो क्रिसमस डे के दिन वह मिल जाता है और वह गिफ्ट सांता क्लॉज देकर जाते हैं क्योंकि वह बच्चों से बहुत प्यार करते हैं। भैया मुस्कुरा कर बोले, ''ओ तो सांता क्लॉज को खुश करने की तैयारी चल रही है।''

क्रिसमस की सुबह जब मोनू सो कर उठा तो फौरन अपने जूते की तरफ दौड़ा। उसमें चॉकलेट और लेटर देखकर वह बहुत खुश हुआ। बहुत उत्सुकता से लेटर पढ़ने लगा जिसमें लिखा था, ''हेलो मोनू बेटे कैसे हो ? देखो मैं सिर्फ ₹10 का ही चॉकलेट दे रहा हूं क्योंकि आज महंगाई पहले से काफी बढ़ गई है और मुझे पूरी दुनिया के बच्चों के गिफ्ट बांटना होता है। मैं तुम्हारे कुछ दोस्तों को अच्छे–अच्छे गिफ्ट देता हूं। इसलिए कि वह बहुत अच्छे बच्चे हैं, समय पर खेलते हैं, समय पर पढ़ते हैं, मम्मी को तंग नहीं करते। और हां तुमने साइकिल के लिए कहा था लेकिन वह मैं अभी देने से रहा फिलहाल इस बार के फाइनल टर्म में मैं तुम्हारा रिजल्ट देखूंगा। अगर तुम्हें अच्छे नंबर आए होंगे तभी मैं तुम्हें साइकिल देने की सोचूंगा। मुझे आशा है अब से तुम एक अच्छा बच्चा बनने की कोशिश करोगे। अलविदा, फिर मिलेंगे... ।

तुम्हारा दोस्त,
सांता क्लॉज।''

मोनू लेटर पढ़कर घर के हर सदस्य को सुनाता रहा और बात कर खुश होता कि मुझे यह सांता क्लॉज ने दिया है। मोनू ने भैया से कहा, मैं जानता हूं कि मुझे सांता क्लाज ने सिर्फ ₹10 वाला चॉकलेट इसलिए दिया क्योंकि मैं अच्छा बच्चा नहीं हूं। पर उन्होंने मुझे अगले साल मनचाहा गिफ्ट देने को कहा है। काश इस बार मेरे फाइनल टर्म में अच्छे नंबर आ जाएं तो सांता क्लॉज मुझे साइकिल देंगे।

उसकी बातें सुनकर घर के सभी लोग बहुत खुश हुए थे। इस घटना से मोनू पर भी बहुत असर पड़ा और वह मन लगाकर पढ़ने लगा। इससे पहले वह बहुत ही नटखट था। किसी से भी बहस कर बैठता, मम्मी को हमेशा तंग करता, भैया की बात भी नहीं सुनता था। पढ़ने में दिन–ब–दिन फिसड्डी होता जा रहा था और छोटी बहनों के साथ मारपीट किया करता था। घरवाले लाख समझते हैं, लालच देते हैं, उसे फर्क नहीं पड़ता लेकिन इस बार तो चमत्कार हो गया। जो काम घर वालों से ना हो सका वह सांता क्लॉज ने कर दिखाया। एक दफा मोनू खेल–खेल में अपनी छोटी बहन से लड़ने लगा। जब गुड्डी उसे चिढ़ाने लगी तब गुस्से में आकर मोनू ने गुस्सा करने के लिए अपना हाथ तो उसकी ओर बढ़ाया मगर यह किया...? ''मन तो कर रहा है तुम्हारी ठुकाई कर दूं पर तुम्हें छोड़ रहा हूं इसलिए कि सांता क्लॉज देख रहे होंगे।'' मोनू यह कहकर शांति से बैठ गया। उधर बगल वाले कमरे में उसके भैया उसकी बातें सुनकर मुस्कुराते हुए सोच रहे थे कि यह कहावत गलत नहीं है कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं, सच्चाई की मूरत होते हैं। यह तो हम पर निर्भर करता है कि हम उन्हें किस सांचे में ढालते हैं, उन्हें कैसा व्यवहार सिखाते हैं।

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

सऊदी सरकार के नए वीजा नियमों से क्या भारतीयों के लिए अब दुबई जाना मुश्किल हो जाएगा ?

सऊदी अरब की सरकार ने वीजा नियमों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, नए नियम लागू होते ही क्रिसमस व नए साल के मौके पर दुबई की सैर करनेवाले हजारों भारतीयों को प्रभावित करेंगे। यह नियम 8 दिसंबर से 14 जनवरी तक लागू रहेगा।

अब दुबई में दोस्तों या रिश्तेदारों के साथ रुकने वाले यात्रियों को वीजा के लिए आवेदन करते समय उनका भी रेंटल एग्रीमेंट, एमिरेट्स आईडी, आवासीय वीजा की कॉपी और कॉन्टैक्ट नंबर इत्यादि देना होगा। इन दस्तावेजों के बिना वीजा आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

जो यात्री होटल में रुकने की योजना बना रहे हैं, उन्हें होटल बुकिंग के दस्तावेज और वापसी की टिकट का विवरण प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

इन नए नियमों के कारण जो यात्री अपने परिचितों के घर पर रुकना चाहते हैं लेकिन जरूरी दस्तावेज नहीं जुटा पाते, उन्हें मजबूरन होटल में रुकना पड़ेगा। दुबई में होटल का खर्च प्रति रात ₹20,000 से ₹1,00,000 तक हो सकता है। दस्तावेज न जुटा पाने के कारण कई लोग अपनी यात्रा रद्द करने पर मजबूर हो सकते हैं।

इन कड़े नियमों के कारण इस बार पर्यटकों की संख्या में काफी गिरावट आ सकती है। हालांकि दुबई प्रशासन का कहना है कि यह कदम सुरक्षा के लिहाज से और अनधिकृत प्रवास रोकने के लिए उठाया गया है। ❐

परवरिश एक संस्कार है

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्कः 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

संस्कार का कोई भी सिलेबस नहीं है और ना कोई ऐसी पुस्तिका है लेकिन प्रतिदिन के व्यवहार से ही संस्कार बनते हैं। हर परिवार में तीन पीढ़ी के लोग रहते हैं, हर पीढ़ी को यह अनुमान रहता है कि हम बिल्कुल सही हैं और हमारे घर के दूसरे हमसे अलग हैं । इसका मुख्य कारण है बदलते समय, बदलते परिवेश, बदलती आदतें इत्यादि। एक उदाहरण मैं यहां पर देना चाहती हूं, एक बच्चे ने यह कह दिया कि मैं सुबह क्यों उठूं मेरे पापा तो नहीं सुबह में उठते हैं। अब उसके तर्क को ध्यान से देखिए वह अपने विषय पर बिल्कुल सही है और उसके पिताजी भी अपने विषय पर सही हैं। अब इन दोनों के बीच की जो कड़ी है वह मां होती है, वह दोनों के बीच की विषय वस्तु में तालमेल बैठाती रहती है।

बच्चे अनुकरणशील होते हैं। यही कारण है कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास में परिवार समाज, माता–पिता, दादा दादी, नाना नानी एवं मित्रगण और स्कूल के परिवेश का बहुत ही प्रभाव पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए समाज आगे बढ़ता है। हर समाज की एक मर्यादा होती है, एक परंपरा होती है और उस परंपरा के अनुसार हर नई पीढ़ी को वह शिक्षा दी जाती है। लेकिन मूलतः सभी समाज में अपने परिवार के बुजुर्गों का आदर और सम्मान करें। आपके पास जो भी चीज है वह सिर्फ आपका नहीं है सभी का है इसलिए बचपन से ही कामों का उत्तरदायित्व बांटना है और चीजों का भी सही आकलन करना है।

बचपन की यही छोटी–छोटी सी सीखें जीवन के बड़े–बड़े उसूल बन जाते हैं। जैसे समय पर उठना, समय पर पढ़ाई करना, अपने कार्यों को स्वयं करने की आदत डलवाना, इंतजार करने की प्रवृत्ति को बढ़ाना, यह सब व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करता है। जैसे इंतजार करने से व्यक्तित्व में धैर्य बढ़ता है। आपका व्यक्तित्व सिर्फ आपका नहीं है। आपके व्यक्तित्व पर पूरे परिवार और समाज का एक अधिकार बनता है और कर्तव्य भी बनता है। जिसको निभाईयेगा तभी आपकी अगली पीढ़ी उसे समझ सकेगी।

हर माता–पिता को अपने बच्चों के साथ एक समय बिताना है और उनके विचारों को सुनना है, समझना है, उनके सामने समस्या को प्रस्तुत करना है और उन पर उनसे सुझाव लेना है।

कई बार ऐसा देखा गया है कि माता–पिता अपनी उम्र के अनुसार ही बच्चों के व्यवहार का विश्लेषण कर उन्हें दोषी ठहरा देते हैं जिसके कारण बच्चे कुंठित हो जाते हैं और अगर इस प्रकार की प्रक्रिया निरंतर होती रही तो कहीं ना कहीं मानसिक विकृति के शिकार बन जाते हैं, खुद में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है। जहां तक मेरा विचार है बच्चों के मन में हीन भावना को उत्पन्न नहीं होने देना है, हर बच्चा अपने आप में एक विशेष गुणों के साथ इस संसार में आता है और अपनी इसी विशेषता के कारण वह सबसे अलग माना जाता है तो बच्चों में उसके गुणों को तलाशिए व तराशिये तभी बच्चों का समुचित विकास हो सकेगा।

प्रायः यह देखा गया है कि बच्चों पर माता–पिता अपनी पसंद को लाद देते हैं जिसके कारण बच्चे परेशान रहते हैं और अपनी पसंद को अभिव्यक्त नहीं कर पाते, फलस्वरूप यह देखा गया है कि बच्चों के व्यक्तित्व में चिड़चिड़ेपन की प्रवृत्ति बन जाती है और अपने से बड़ों के कथनों पर झल्लाने लगते हैं। यह उनके दुख का कारण होता है और उसका प्रभाव उनकी पढ़ाई के ऊपर पड़ता है तो यहां पर भी पेरेंट्स को सतर्कता दिखलानी है कि तुम अपनी पसंद बताओ फिर मैं अपनी पसंद बताऊंगा। इससे बच्चों में निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे बार–बार किसी काम के लिए मना नहीं करिए, खुद को करने दीजिए, मुश्किल आएगी तो वह सुलझाने की कोशिश करेगा। हमलोग कभी–कभी बच्चों को अंडरस्टीमेट भी कर देते हैं और कभी–कभी ओवर एस्टीमेट भी कर देते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास असंतुलित हो जाता है। सही रास्ता दिखाना है ना कि उसकी निंदा करनी है, छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखकर अगर घर के वातावरण को खुशनुमा बनाया जाए तो बच्चों का स्वभाव भी खुशहाल बनता है। बच्चों के स्वभाव पर विशेषकर माता–पिता के आपसी ताल में तर्क–वितर्क, प्यार–मोहब्बत और झगड़ों का बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। अच्छी परवरिश जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, बच्चों के सामने कभी भी पारिवारिक सदस्यों की या पड़ोसियों की शिकायत या कमजोरी की चर्चा ना करें। इससे यह होता है कि बच्चों की धारणा उस व्यक्ति के प्रति नकारात्मक बन जाती है। बल्कि उनका उनके साथ ऐसे नकारात्मक किसी भी प्रकार का अनुभव नहीं हुआ है लेकिन सुनी सुनाई बात पर एक धारणा बना लेते हैं। ❐

विद्या एवं ज्ञान के अधिष्ठाता गुरु

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्कः 9709378488

धनु एवं मीन राशि के स्वामी बृहस्पति, ग्रहों में आकार में सबसे बड़े हैं। बृहस्पति देवताओं के गुरु थे। यह कर्क राशि में उच्च के एवं मकर राशि में नीच होते हैं। कर्क के पांच अंश तक अति उच्च एवं मकर के पांच अंश तक अति नीच होते हैं। यह पूर्वोत्तर दिशा के स्वामी तथा पुरुष ग्रह हैं। ज्योतिष में गुरु को सर्वाधिक शुभ ग्रह माना गया है। गुरुवार इनका अपना शुभ वार है।

यह लग्न में बली और चंद्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। यह चर्बी और कफ धातु की वृद्धि करने वाले हैं। इनसे पुत्र, पौत्र ,विद्या, गृह, गुल्म एवं सूजन आदि रोगो का विचार किया जाता है। सूर्य, चंद्र, मंगल उनके मित्र ग्रह हैं। शनि समभाव वाला ग्रह है। गुरु के प्रभाव से हर प्रकार की समृद्धि प्राप्त होती है । भूमि,भवन,जीवनसाथी, पुत्र आदि सभी सुख प्रदान करते हैं। शुभ भावस्थ एवं शुभ राशिस्थ गुरु व्यक्ति को उच्च पदासीन करता है और उसका मान बढ़ाता है। गुरु के प्रभाव से व्यक्ति शिक्षक, प्रोफेसर ,केमिस्ट, डॉक्टर, वकील,जज, बैंकर ,अधिकारी, राजदूत, नेता या मंत्री ,धर्म उपदेशक या समाज सेवक या अच्छा पथ प्रदर्शक हो सकते हैं।

गुरु का राशि अनुसार फलादेश

मेष राशि का गुरु व्यक्ति को विनम्र, ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान और विजयी बनाता है।

वृष राशि का गुरु व्यक्ति को सदाचारी ,बुद्धिमान, दयालु, मिलनसार और धनवान बनाता है।

मिथुन राशि का गुरु व्यक्ति को विज्ञान विशारद, अनायास धन प्राप्त करने वाला, व्यवहार कुशल, विश्वास पात्र और सहृदय बनाता है।

कर्क राशि का गुरु व्यक्ति को विद्वान, सत्यवक्ता, सदाचारी, योगी,सुधारक, लोकमान्य ,सुखी, धनी और नेता बनाता है।

सिंह राशि का गुरु व्यक्ति को सभा चतुर, शत्रुजीत, धार्मिक, कार्य कुशल, प्रकृति प्रेमी और तेजस्वी बनाता है।

कन्या राशि का गुरु व्यक्ति को सुखी, भोगी, बिलासी ,चित्रकला निपुण और बुद्धिमान बनाता है।

तुला राशि का गुरु व्यक्ति को बुद्धिमान,व्यवहार कुशल ,कवि, लेखक,संपादक,सुंदर, शांत व मिलनसार बनाता है। उसके मस्तक पर तेज होता है।

वृश्चिक राशि का गुरु व्यक्ति को दृढ़ प्रतिज्ञ ,चतुर ,पंडित ,लेखक, शास्त्रोक्त, कार्यकुशल,राज मंत्री और पुण्य आत्मा बनाता है।

धनु राशि गुरु की अपनी राशि है। व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक रूप से दृढ़ करता है, पैतृक संपत्ति दिलाता है।

मकर राशि गुरु की नीच राशि है। मकर राशि में गुरु के रहने पर व्यक्ति को अस्थिर मन, प्रवासी ,व्यर्थ परिश्रमी और चंचल चित्त वाला बनाता है।

कुंभ राशि का गुरु व्यक्ति को प्रवासी, कपटी, रोगी एवं विवादास्पद बनाता है।

मीन राशि गुरु की अपनी राशि है इसलिए मीन राशि में गुरु हो तो लेखक, शास्त्रज्ञाता, राजमान्य, शांत, दयालु, विद्वान, कुशल, उच्च पदासीन, राज्यमान्य और सुखी होता है।

द्वादश भावों में गुरु का फल

लग्न में गुरु के होने पर जातक ज्योतिषी, दीर्घायु, सुंदर ,सुखी, विनीत ,धनी , राज्य मान्य एवं धर्मात्मा होता है।

द्वितीय भाव में गुरु हो तो व्यक्ति सुंदर, मधुर भाषी, राज्य मान्य, लोकमान्य,सुवक्ता ,सदाचारी,

पुण्य आत्मा ,भाग्यवान ,शत्रु नाशक, धनी एवं परिवार पालक बनाता है।

तृतीय भाव भाव का गुरु व्यक्ति को कृपण, प्रवासी, लेखक, योगी, आस्तिक, स्त्री प्रिय, विदेश प्रिय, पर्यटनशील एवं वाहन युक्त बनाता है।

चतुर्थ भाव का गुरु व्यक्ति को मातृ पितृ भक्त, सुंदर देही, कार्यरत, उद्योगी, ज्योतिर्विद, राजमान्य, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहार कुशल बनाता है।

पंचम भाव का गुरु व्यक्ति को आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय, कला श्रेष्ठ, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, नीति विशाल एवं संततिवान बनाता है।

छठे भाव का गुरु व्यक्ति को मधुर भाषी, ज्योतिषी, विवेकी विद्वान, सुकर्मरत, दुर्बल, उदार ,लोकमान्य, निरोगी एवं प्रतापी बनाता है।

सप्तम भाव का गुरु व्यक्ति को विनम्र, सुशिक्षित, सम्मानित, धनी, बनाता है। माता–पिता का स्नेह प्राप्त होता है एवं जीवनसाथी सुंदर एवं सुशील होता है।

अष्टम भाव का गुरु व्यक्ति को दीर्घायु ,शील संपन्न, सुखी, मधुर भाषी, कुल दीपक , ज्योतिषी, गुप्त रोगी एवं मित्रों द्वारा धन का नाशक बनाता है।

नवम भाव का गुरु व्यक्ति को तपस्वी, योगी, वेदांती, भाग्यवान, विद्वान, पराक्रमी, बुद्धिमान , पुत्रवान एवं धर्मात्मा बनाता है।

दसवें भाव का गुरु व्यक्ति को उत्तम पद, मान एवं प्रतिष्ठा दिलाता है। व्यक्ति को सत्कर्मी, सदाचारी, ऐश्वर्यवान ,साधु, चतुर, न्यायप्रिय, प्रसन्न, मातृ पितृ भक्त , धनी एवं भाग्यवान बनाता है।

एकादश भाव का गुरु व्यक्ति को स्वस्थ ,सुंदर, विद्वान, धर्मशील, व्यवसायी, संतोषी, राजपुज्य एवं पराक्रमी बनाता है। उनके बहुत मित्र होते हैं एवं संतान सुख भी मिलता है।

12 वें भाव का गुरु व्यक्ति को आलसी, मीतभाषी, सुखी ,योगाभ्यास, परोपकारी , उदार , सदाचारी, लोभी कुटिल एवं अपव्ययी बनाता है। लेकिन स्वग्रही गुरु के होने पर धर्मात्मा भी बनाता है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य ग्रहों की दृष्टि एवं संबंध होने पर फल में परिवर्तन होता है।

गुरु के अशुभ फल होने पर उनके उपाय एवं टोटके निम्नवत हैरू

(1) गुरुवार को व्रत रखें एवं विष्णु भगवान की पूजा करें,

(2) गुरुवार को संबंधित वस्तुओं का दान दें,

(3) माथे पर केसर का तिलक लगायें,

(4) बृहस्पतिवार को मंदिर में पीले रंग का वस्त्र ,चना दाल, हल्दी एवं धार्मिक पुस्तकें यथा संभव दान करते रहें। ❐

कहानी

आशिष-सुमन

✍ बलविन्दर 'बालम'
ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)

मैं एक शादी पर गया और शगुन की रस्म अदा करने के बाद वहां भोजन हॉल में भोजन शुरू करने के लिए जैसे ही प्लेट उठाने लगा तो एक बालक ने नमस्कार करते हुए मेरे पांव छुए। मैंने उसे आशीर्वाद तो दिया परन्तु उसे पहचान न सका। सोचा, कोई परिचित होगा, कोई जान–पहचान वाला होगा। मेरी सोच की पकड़ में वह आया नहीं। खैर! मैं भोजन के लिए प्लेट उठाने आगे बढ़ा तो उस लड़के ने बड़े इत्मीनान से, प्यार–सत्कार से, थोड़ा मुस्कुराते हुए, अपनत्व भरे भाव से एक प्लेट उठाई, कंधे पर रखे तौलिए से उसे साफ किया, थोड़ा मुनासिब सलाद और एक चम्मच मुझे देते हुए विनम्र भाव से कहा, सर, लीजिए! और जल्दी–जल्दी से जाता हुआ वह एक वेटर से कह गया, कि सर को किसी चीज की जरूरत हो तो ध्यान से यहीं दे देना। भीड़ काफी थी। मैं फ़िर भी उसे पहचान न पाया और न ही पूछ सका, कि बेटा, तुम कौन हो?

मैंने भोजन तो कर लिया पर मेरा मन उस लड़के के बारे में ही सोचमग्न रहा। आखिर में मैंने उस वेटर से ही पूछा, बेटा, वह लड़का कहां है? जो मेरे बारे तुम्हें कह कर चला गया था। उस वेटर ने कहा, सर, वह वहां नान बना रहा है। मैं उसके पास गया, वह तपाक से सारा काम छोड़ कर, तौलिए से हाथ साफ करता हुआ मेरे पास आ गया। आते ही उसने विनम्र भाव से कहा, सर, आप ने मुझे पहचाना नहीं। मैंने मस्तिष्क में अतीत के आईने से झांकते हुए कोशिश के बाद उसको कहा, बेटे, नहीं। मैंने तुझे पहचाना नहीं। उसने आंखों में नमी भरते हुए कहा, सर, मैं दीपू हूँ। आप से पढ़ता रहा हूँ, सर। मैं उसका नाम सुनते ही हैरान रह गया। मेरे मस्तिष्क में वे दिन चल–चित्र की तरह दौड़ने लगे। मैंने विस्मित होकर कहा, बेटे, तू नान बना रहा है? तू तो इतना मेधावी, होशियार लड़का था। प्रत्येक परीक्षा में तू तो मैरिट में आता रहा था। आठवीं श्रेणी में तो बोर्ड की परीक्षा में मैरिट सूची में तेरा नाम था। तूने क्या हुलिया बना रखा है। इस चेहरे पर अभी से झुरियां, अपरामता, बुझी–बुझी सी बोझील आंखें, क्या हो गया तुझे? तू आगे पढ़ा नहीं क्या? मैं तो सोचता था कि तू एक दिन बहुत बड़ा पदाधिकारी बनेगा। तू आगे क्यों नहीं पढ़ा? मैंने उसके गंदले रूखे–सूखे बालों पर हाथ फेरते हुए कहा।

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, वैसे ही जैसे स्कूल में पकड़ा करता था किसी समस्या के समाधान के बारे में पूछते समय और मुस्कुराते हुए कहने लगा, सर, क्या बताऊं? आठवीं श्रेणी को पास करके मैं दूसरे स्कूल में चला गया था। दसवीं श्रेणी पास करने के बाद जब मैं ग्यारहवीं श्रेणी में प्रवेशार्थ एक अन्य स्कूल में दाखिल हुआ, भाग्य की विडम्बना कि मास के भीतर ही एक दिन पिता जी शाम को मजदूरी करके साईकल पर आ रहे थे कि एक शराबी ट्रक वाले ने उनको कुचल दिया और वह मौके पर ही दम तोड़ गए। ट्रक का पता ही नहीं चला। अभी एक सदमा भूला नहीं था कि दो माह के बाद ही माता जी हार्ट अटैक से चल बसीं। और इस से घर में एक छोटी बहन और एक छोटे भाई का दायित्व मेरे कंधों पर आ गया। सर, सब रिश्तेदारों ने, सगे संबंधियों ने साथ छोड़ दिया। सर, इस मुसीबत में कोई न बना, किसी ने साथ न दिया। हम तीनों भाई बहन, रात भर मां और पिता जी को याद करके रोते रहते। घर में हमारे भाग का केवल एक ही कमरा था। क्योंकि दो चाचा थे। वे भी मजदूरी, मेहनत–दिहाड़ी ही करते थे। रोटी के लिए कोई न कोई काम तो करना ही था। मजबूरन इस काम से संतोष करना पड़ा। यह हलवाई हमारे गांव का है। सौ रूपए दिहाड़ी पर मैं इस के साथ काम करने आ जाता हूँ। लगभग दो सालों से यह काम करता आ रहा हूँ।

मैंने दीपू को प्यार से गले लगा लिया और अपने दिल में संकल्प ले लिया कि दीपू को पढ़ाऊंगा। अध्यापक का दायित्व होता है कि वह मेधावी छात्र की सहायता करें, साधन विहीन छात्रों का मार्ग दर्शक बनकर उनके भविष्य को उज्जवल बनाने का प्रयास करे।

दीपू बेटे, तू आगे पढ़ सकता है। मैं चाहता हूँ तू इस काम के साथ–साथ प्राईवेट पढ़ ले। मैं तेरी मदद करूंगा। तू किसी दिन मेरे घर आना। मैंने उसे पता समझा दिया। वह मेरी बात मान गया। मैं उसे आशीर्वाद देकर वापिस लौट आया।

मैं शाम को घर के आंगन में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। बाहर बेल बजी, मैंने गेट खोला तो देखा दीपू खड़ा था एक आशा की किरण लिए, जिंदगी का संकल्प लिए। उसकी आंखों में एक चमक सी

दिखाई दी जो भविष्य को रौशन करना चाहती है। मैंने पत्नी को आवाज देकर चाय बनवाई। बातों के सिलसिले के साथ–साथ हम दोनों ने चाय पी। उसको मैंने कुछ महान व्यक्तियों की जीवनशैली के बारे बताया। श्री लाल बहादुर शात्री, सिख गुरूओं, रूसो, दीदरो इत्यादि की जीवनियां, उनके संकल्प, उनकी समाज को देन आदि के बारे में बताकर मैंने उसके हृदय में भविष्य को उज्जवल बनाने का बीज बो दिया, जिसको उसने अन्तरात्मा से स्वीकार कर लिया था।

मैंने कपड़े पहने। दीपू और मैं बाजार गए। वहां से ग्यारहवीं कक्षा की पुस्तकें खरीदीं और उसका प्राईवेट दाखिला भेज दिया। पुस्तकें देते हुए उसको मैंने फ़िर समझाया था, जिंदगी का अर्थ क्या है? दीपू, जिंदगी में हमेशा इन्सान को आशावादी होना चाहिए। बेटा, निराशावादी लोग तरक्की नहीं करते। उनके फूलों में सुगंधि नहीं होती इत्यादि। दीपू ने जाते समय प्रण किया। मैं पढ़ूंगा। उसने मेरे पांव छुए और भविष्य की दहलीज पर खूबसूरत प्राप्तियों के बंदनवार सजाने के लिए चल दिया मंजिल की ओर।

दीपू हलवाई के काम के साथ–साथ दिल लगा कर पढ़ता। हलवाई का काम रोज नहीं मिलता था। किसी समागम या ब्याह–शादियों में ही काम मिलता था उसे। शेष समय वह पढ़ता और भाई–बहन को भी साथ–साथ पढ़ाता। बीच–बीच में मेरे से सलाह–मश्वरा करने के लिए आता–जाता रहता। समय का घोड़ा दौड़ता गया। समय का सूर्य उसी का है जो उसे अपना ले। समय के साथ जो चलते हैं वे समय के देवता कहलाते हैं। सूर्य की भांति जो चलते हैं वहीं महानता के पर्व बनते हैं।

दीपू ने ग्यारहवीं और बारहवीं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। अगले ही माह में एक अखबार में जे–बी–टी– अध्यापकों के दो वर्षीय कोर्स का मैंने विज्ञापन पढ़ा। उसका मैंने फार्म भरवा दिया। उसको मैरिट में दाखिला मिल गया। हलवाई के काम के साथ–साथ अब वह सुबह–सुबह अखबारें बांटने का काम भी करने लगा था। समय कब बीता पता ही न चला। इसी बीच मेरा स्थानांतरण किसी दूसरे शहर में हो गया। दीपू को मैंने बताया, मेरी तरक्की होने की वजह से मेरा स्थानांतरण हो गया है। दूसरी बात यह है कि दीपू, मैं अपने ही घर चला गया हूँ। किसी भी चीज की जरूरत पड़े तो मुझे याद कर लेना या मेरे पास आ जाना। देखो बेटा, जिंदगी कोई इतनी लम्बी नहीं है, चुटकी से बीत जाती है जिंदगी। मैं अब कितने वर्षों का हो गया हूँ। तू ही अपनी आयु को ले ले, क्या ऐसे नहीं लगता कि इतने वर्ष चुटकी से बीत गए? बस, समय को बांध लो मेहनत के आंचल से फ़िर यह धरती, यह आसमां तुम्हारा है। उसे समझाते हुए मैंने घर का पता दे दिया।

जिस दिन जाना था, दीपू हमें बस–स्टैंड पर छोड़ने आया था। पैर छू कर गले मिला। आंखों में आंसू भर लिए, सर! कह कर उसने आगे शब्द रोक लिए, जिन्हें मैं समझ गया था। मैंने उसे तरक्की भरा, आशीर्वाद दिया और कहा, दीपू, पढ़ना मत छोड़ना। तू एक दिन महान व्यक्ति बन सकता है। देखो बेटा, मस्तिष्क एक ऐसी धरती है जिसमें निष्ठा पूर्वक परिश्रम से कोई भी फसल बोई जा सकती है। मैं अपने शहर आ गया। दीपू के गांव से मेरा शहर कोई 150 किलोमीटर दूर था।

मैं अब सेवा–निवृत हो गया था। दीपू का ख्याल भी मन से ओझल हो गया था। घरेलू जिम्मेवारियों में, रिश्ते नातों में, समाज में रह कर इन्सान क्या–क्या भूल जाता है, कुछ पता नहीं चलता। वैसे भी बढ़ती आयु के तकाजे में याददाश्त–स्मरणशक्ति क्षीण हो जाती है, नजर कमजोर हो जाती है। आंखों का फैलाव कोनों को छूने लगता है। शरीर में पहलेवाली क्षमता नहीं रहती। मेरे सारे बाल सफेद हो चुके थे। चेहरे पर झुरियों का साम्राज्य था। दांत भी कुछ ही शेष बचे थे। सेवा निवृत हुए कोई दस वर्ष हो गए थे।

एक दिन मैं पैंशन लेने के लिए बैंक में गया। कुछ लेट हो गया था। बैंक में पहुंचा तो एक क्लर्क (लिपिक) ने कहा, अब आप लेट हो चुके हैं, कृपया कल पैंशन ले लेना। आज नए साहिब आए हैं, उनकी प्रथम आमद में पार्टी होने वाली है।

मैं बैंक के गेट से बाहर होने वाला था, कि पीछे से किसी ने झुककर मेरे पांव छूकर मुझे बगल में ले लिया। एक अपटूडेट आकर्षक व्यक्तित्व ने बगल ढीली करते हुए कहा, सर, आईए! मैंने चश्मे से झांकते हुए गौर से देखा। थोड़ी देर पहचानने में लगी। दीपू–––तू!

हां, सर! वह मुझे मैनेजर वाले कमरे में ले गया। मैंने चलते–चलते कहा, तू यहां कैसे आया है?

सर, आप बैठिए तो सही। उसने मुझे जबरदस्ती मैनेजर वाली कुर्सी पर बिठा दिया। मैंने बहुत इन्कार किया, कि यह तू क्या कर रहा है? पर वह मेरी अब बात मानने वाला कहां था। भाई, यह सब क्या कर रहे हो?

उसने बेल बजाई। एक चपरासी (सेवादार) आया और उसका इशारा समझकर दो ग्लास ठंडा ले आया।

सर, मैं आप के शहर में इस बैंक में मैनेजर बन कर आया हूँ। यह सुनते ही मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। मेरी खुशी का पक्षी आसमान को छूने लगा। मैं सब भूल गया, कि मैं कहां आया था। सर, आज पार्टी में आप भी मेरे साथ शामिल होंगे। पार्टी का प्रबन्ध हो चुका था। दीपू ने मेरी बांह पकड़कर मुझे पार्टी में मेहमान (अतिथि) वाली उस कुर्सी पर बिठा दिया

जिस पर उसे स्वयं बैठना था। पार्टी से पूर्व दीपू ने मेरा संक्षिप्त सा परिचय दिया। सब को बहुत खुशी हुई। बैंक कर्मियों में मेरी इज्जत, मान–सम्मान बहुत बढ़ गया।

पार्टी खत्म होने के बाद दीपू और मैं उसकी गाड़ी में बैठकर घर आ गए। रास्ते में दीपू ने मिष्ठान का डिब्बा ले लिया। घर पहुंच कर मैंने समस्त परिवार से उसकी मुलाकात करवाई।

मैंने दीपू से उत्सुकता और जिज्ञासा से पूछा, कि तूने जे–बी–टी– करने के बाद क्या किया? कैसे रहा? परिवार कैसा है इत्यादि?

उसने बताया कि सर, आप मुझे हिम्मत और धैर्य का बल देकर चले गए। बुझे दीपक को तेल और बाती देकर। जिसकी रौशनी अब आप देख रहे हैं सर। मैंने दिन रात मेहनत की। एक गांव में अध्यापक लग गया। साथ–साथ पढ़ता भी रहा। बहन की शादी की। भाई पढ़ रहा है। अध्यापक रहते हुए प्राईवेट बीए की। बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अखबार में प्रोबेशनरी आफ़िसर का विज्ञापन निकला। उस टैस्ट से मैं मैरिट पर रहा। प्रोबेशनरी आफ़िसर के बाद अब यहां आपके सामने हूँ, सर। उसके नेत्रों की ज्योति से मेरे नेत्रों की ज्योति मिल कर आलोकित हो उठी।

उसने कहा, सर, मैं आपको बहुत याद करता रहा। पर क्या बताऊं, घर की जिम्मेवारियों ने सिर उठाने नहीं दिया। सर, आप द्वारा आरोपित पौधा अंकुरित, पुष्पित, फलित होकर अब अपनी महक फैला रहा है। जिसका श्रेय सर, केवल और केवल मात्र आप के आशीर्वाद को ही है। ऐसा कहते हुए उसने अपना सिर मेरी गोद में टिका कर स्नेह भरी दृष्टि मेरे मुख पर टिका दी। मैंने ऐसा महसूस किया जैसे दुनिया का सब से दीर्घ सम्मान आज मुझे मिला है, केवल मुझे। ❐

लघुकथा

तीर्थयात्रा

✍ पूजा गुप्ता
भगवानदास की गली
आदर्श स्कूल के सामने
गणेश गंज, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

क्यों ले जाऊं तीर्थ पर मां को? राकेश ने चीखते हुए अपने छोटे भाइयों से कहा।

तीर्थयात्रा पर जाने की आस लगाए बूढ़ी विधवा मां धवल वस्त्र धारण किए मंदिर के पास भूखी–प्यासी बैठी थी। तभी चारों भाइयों को लड़ते देख बोली, ष्क्या तुममें से कोई भी बेटा ऐसा नहीं, जो मुझे तीर्थ स्थान पर ले जाए? मेरी इच्छा पूरी करें।

हम लोगों के पास फालतू के पैसे नहीं है, मां। हम आपकी तीर्थयात्रा का खर्च नहीं उठा सकते! छोटा बेटा नरेश कटु लहजे में बोला।

बड़ी बहू रेणु मुंह बनाते हुए बोली, सुनो, कह देती हूं, मां को तीर्थ के लिए दो हजार से उपर ना देना। क्या मां केवल आपकी है? पिताजी के गुजरने के बाद हम ही तो उन्हें पाल रहे हैं और आपके तीनों भाई–बीवी ऐश से जी रहे हैं।

तभी राकेश गुस्से से रेणु से बोला, तुम्हें ही तो बंटवारे का शौक चढ़ा था कि मां को साथ रख लो, मकान बड़ा मिल जाएगा। मैं उन छोटे–छोटे मकानों में नहीं रह सकती।

बूढ़ी मां बच्चों को लड़ता देख और उन कटु वचनों को सुन टूट–सी गई और मौन हो गई।

राकेश का बेटा कान्हा सबको लड़ते हुए देख रहा था। तभी अचानक बोला, पापा, क्या मैं दादी को तीर्थयात्रा पर ले जाऊं? मेरी तो टिकट भी कम लगेगी।

चुप रहो! अभी तुम इतने बड़े नहीं हुए कि दादी का बोझ उठा सको। राकेश ने गुस्सा करते हुए बेटे से कहा तो, बेटा दादी के पास जाकर बैठ गया।

बूढ़ी मां को अपने अंतिम समय का आभास हो गया और वह लड़खड़ाती हुई जुबान से पोते से बोली, मेरा बाल गोपाल तू मत परेशान हो। और बोलते–बोलते एकदम से शांत होकर लुढ़क गई।

''दादी! मम्मी–पापा देखो, दादी को क्या हुआ?''

जिन बच्चों के सुखमय जीवन के लिए उसने अपना पूरा जीवन विपत्तियों का सामना करते हुए काट दिया, आज उन बच्चों की बातें सुनकर मां का दिल धड़कना बंद हो गया। वह प्राण त्याग कर अनंत 'तीर्थयात्रा' पर निकल गई, जहां से लौटना असंभव था। ❐

बॉलीवुड सुपरस्टार अनन्या पांडे ने भारत में 'न्यूयॉर्क' इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन (NIF ग्लोबल) लॉन्च किया

बॉलीवुड स्टार अनन्या पांडे द्वारा ब्रांड की स्टाइल आइकन के रूप में भारत के प्रमुख डिजाइन शिक्षा संस्थान, न्यूयॉर्क इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन (NIF ग्लोबल) का बहुप्रतीक्षित लॉन्च 13 नवंबर को मुंबई और भारत भर के NIF GLOBAL के छात्रों के लिए NCPA ऑडिटोरियम, मुंबई में आयोजित किया गया। वैश्विक फैशन आइकन और जेन जेड के सबसे चमकीले सितारों में से एक, अनन्या के करियर में स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2, कॉल मी बे और CTRL जैसी हिट फिल्में शामिल हैं। अपनी विशिष्ट शैली के लिए जानी जानेवाली अनन्या ने पेरिस हाउते कॉउचर वीक में भी धूम मचाई और चैनल के पेरिस फैशन वीक शो में ग्लैमर का तड़का लगाया और रोहित बल के लिए लैक्मे फैशन वीक XFDCI शो का समापन किया, जिससे एक बहुमुखी फैशन शक्ति के रूप में उनकी स्थिति और मजबूत हुई।

न्यूयॉर्क इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन (एनआईएफ ग्लोबल–पूर्व में एनआईएफडी ग्लोबल) मैनहट्टन न्यूयॉर्क में मुख्यालय वाला एक प्रतिष्ठित संस्थान

है, जो लंदन स्कूल ऑफ ट्रेंड्स (एलएसटी) के साथ साझेदारी में भारत की समृद्ध रचनात्मक संस्कृति के साथ मिश्रित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रेरित पाठ्यक्रम पेश करता है। साथ में, वे एनआईएफ ग्लोबल पेश करते हैं – एक विश्व स्तरीय मंच जो फैशन, इंटीरियर डिजाइन, प्रबंधन और सौंदर्य में सबसे अधिक मांगवाली शिक्षा प्रदान करता है। यह कार्यक्रम वास्तव में एक बड़ी सफलता थी, अंधेरी, बांद्रा और ठाणे में मुंबई के केंद्रों के छात्रों को फैशन और सिनेमा के सबसे बड़े नामों में से एक से सीखने का दुर्लभ अवसर मिला। एनआईएफ ग्लोबल अंधेरी की केंद्र प्रमुख श्रीमती ममता गौतम ने सत्र को परिवर्तनकारी बताया, ''फैशन, स्टाइल और व्यक्तित्व के बारे में अनन्या की अंतर्दृष्टि ने इस बात के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया है कि ये मेंटर वार्ता क्या हासिल कर सकती है।"

एनआईएफ ग्लोबल अंधेरी के निदेशक श्री विवेक गौतम ने इस तरह के जुड़ावों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "एनआईएफ ग्लोबल अंधेरी में, हम छात्रों के लिए उद्योग के नेताओं के साथ बातचीत करने के अवसर पैदा करने को प्राथमिकता देते हैं। ये अनुभव उन्हें प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त देते हैं, उनका आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और फैशन की दुनिया में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।"

एनआईएफ ग्लोबल के विश्व स्तरीय पाठ्यक्रम को गौरी खान, मनीष मल्होत्रा, ट्विंकल खन्ना और एशले रेबेलो जैसे उद्योग के दिग्गजों की सलाह से पूरित किया जाता है। उद्योग के ये दिग्गज व्यावहारिक सलाह और अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि छात्रों को रचनात्मक दिशा और उद्योग विशेषज्ञता का एक अनूठा मिश्रण प्राप्त हो।

इस कार्यक्रम की शैली और प्रबंधन द इवेंट कंपनी द्वारा किया गया। जिसका नेतृत्व आंचल महाजन और मंदीप डायलानी ने किया, जो उच्च प्रभाव वाले उद्योग इंटरैक्शन की मेजबानी के लिए एनआईएफ ग्लोबल अंधेरी के समर्पण को और दर्शाता है।

❐

ठंड के मौसम के लिए हेल्दी मिठाई-आंवले का लड्डू

✍ किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

मिठाइयां तो आपने बहुत खाई होंगी लेकिन आपने कभी आंवले का लड्डू नहीं खाया होगा। इस अंक में हम आंवले का स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक लड्डू बनाएंगे।

सामग्रियांः–

1 किलो आंवला, एक बड़ा चम्मच घी, ड्राई फ्रूट्स स्वाद अनुसार, सेंधा नमक एक छोटा चम्मच(ऑप्शनल), 250 ग्राम चीनी , गुड 750 ग्राम, छोटी इलायची 8–10।

बनाने की विधिः–

सर्वप्रथम हम आंवले को कद्दूकस कर लेंगे। अब हम एक कड़ाही लेंगे, कड़ाही गर्म होने पर एक बड़ा चम्मच घी डालेंगे। घी गर्म हो जाने पर ड्राई फ्रूट्स डालेंगे और धीमी आंच पर हल्का भून लेंगे। अब उसमें हम कद्दूकस किया हुआ आंवला डाल देंगे। हल्का–सा भूनने के बाद करीब 2 मिनट बाद हम गुड़ चीनी और छोटी इलायची डाल देंगे और आंवले को बीच–बीच में तब तक चलाते रहेंगे जब तक वह एक हलवा जैसा नहीं हो जाए अर्थात उसका पानी सूख जाए। अब हम इसे थोड़ा ठंडा होने के लिए छोड़ देंगे। जब यह ठंडा हो जाए तब हम दोनों हथेलियों पर घी या पानी लगाकर गोल–गोल लड्डू बना लेंगे। हमारा आंवले का लड्डू बनाकर तैयार हो गया। ❐

मुंबई के पायलट सुसाइड केस में समाज को सोचने की जरूरत है

✍ प्रीति सिंह

मुंबई के पायलट सुसाइड केस में जो एंगल उभर कर आ रहा है, उस पर समाज को सोचने की जरूरत है। एक लड़की जो काफी पढ़ी – लिखी थी। मॉडर्न विचारों की थी। जो अपने शहर की पहली महिला पायलट थी। जिसके परिवारवाले सेना में थे। आखिर उसने एक बिगड़ैल लड़के के बर्ताव को इस हद तक क्यों सहा? भावनात्मक रूप से वो इतनी कमजोर क्यों पड़ गई कि उस लड़के के लिए खुद की जिंदगी की बलि चढ़ा दी? क्या आखिरी पल में उसे अपने माता पिता, भाई – बहनों की याद नहीं आई?

ये हम सबके लिए सोचने का समय है। आखिर हम कैसे समाज में जी रहे हैं जहां संवेदनाओं की इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। हम सब अलग इंसान हैं। हम सबके सोचने, समझने की शक्ति, बर्दाश्त करने की शक्ति अलग है। हम भावनाओं के स्तर पर, विचारों के स्तर पर भिन्न हैं। जब वो लड़की अपने सबसे बुरे समय से गुजर रही थी, क्यों नहीं उसके साथियों और भाई – बहनों को इसका आभास हुआ? इसकी सबसे बड़ी वजह संवाद की कमी हो सकती है, जो अक्सर हम अपने जीवन में करते हैं। हम सबके जीवन में बुरा वक्त आता है। हर कोई कुछ–ना–कुछ झेलता है लेकिन कोई ऐसी चीज होती है जो हमें इससे निकाल लेती है। कभी ये परिवार होता है, कभी ये दोस्त होते हैं, कभी आपकी आत्मशक्ति होती है तो कभी ये अध्यात्म होता है।

तो खुद को मजबूत बनाइए, दूसरों के लिए नहीं बल्कि अपने लिए। ताकि जब कोई आपके साथ खड़ा होनेवाला नहीं हो तो आप खुद अपने लिए खड़े हों और जीवन की धार में बहने के लिए अपने–आपको छोड़ दें। आखिर कहीं–ना–कहीं जाकर किनारा तो मिलेगा ही। ❐

आयुर्वेद और स्वास्थ्य

आयुर्वेदिक श्रेणी का पौधा तुलसी लाभप्रद

1. तुलसी पत्तों के रस के प्रयोग से साधारण मौसमी बुखार उतर जाता है। इसे पानी में मिलाकर हर दो–तीन घण्टे में पीने से बुखार कम हो जाता है।
2. आपकी जानकारी के लिये कई आयुर्वेदिक खाँसी वाली दवा (कफ सिरप) में तुलसी का इस्तेमाल अनिवार्य है।
3. यह राज यक्ष्मा (टी.बी), श्वासनली में होने वाली सूजनकारी बीमारी (ब्रोंकाइटिस) और दमा जैसे रोगों के लिए भी फायदेमन्द है।
4. ऐसा माना जाता है साँप या बिच्छू के काटने पर इसकी पत्तियों का रस, फूल और जड़ें विष नाशक का काम करती हैं।
5. यह तो वैज्ञानिक तथ्य है कि तुलसी के तेल में विटामिन सी, कैरोटीन, कैल्शियम और फॉस्फोरस प्रचुर मात्रा में होते हैं।

6. साथ ही इसमें एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरल गुण भी होते हैं।
7. यह मधुमेह के रोगियों के लिए भी फायदेमन्द माना गया है।
8. तुलसी का तेल एंटी मलेरियल दवाई के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि एंटीबॉडी होने की वजह से यह हमारी इम्यूनिटी भी बढ़ा देता है।
9. तुलसी पत्तों के रस का नियमित सेवन पाचन क्रिया को भी मजबूत करता है।
10. साधारण जुकाम में इसके सादे पत्ते खाने से भी फायदा मिल सकता है।

चूँकि तुलसी आयुर्वेदिक श्रेणी का पौधा माना जाता है इसी कारण से उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर हम मान सकते हैं कि तुलसी के नियमित प्रयोग से हम स्वास्थ्य को बहुत ही कम लागत के साथ बढ़िया ढंग से रख सकते हैं।

प्रस्तुतिः गोवर्धन दास बिन्नाणी
'राजा बाबू', मुम्बई

क्रिप्टोकरेंसी क्या है?

✍निशांत कुमार प्रधान
इंटरनल ऑडिटर,
लेबर लॉ एडवाइजर एवं टैक्स प्रैक्टिशनर्स
संपर्क: 8210366618
ईमेल : neeaan7@gmail-com

क्रिप्टोकरेंसी का अर्थ होता है, एक डिजिटल धन जो वर्चुअल रूप से मौजूद मुद्रा का एक रूप है और यह बैंकों पर निर्भर नहीं करता कि लेन–देन को सत्यापित किया जा सके। क्रिप्टोकरेंसी की इकाइयां खनन प्रक्रिया के माध्यम से की जाती हैं। इस प्रक्रिया में आमतौर पर कंप्यूटर शक्ति का प्रयोग करते हुए सिक्कों को उत्पन्न करने वाली जटिल गणितीय समस्याओं को हल करना शामिल होता है। लेन–देन को सत्यापित करने के लिए एनक्रिप्शन के कारण क्रिप्टोकरेंसी नाम लोकप्रिय हो गया। इसमें वॉलेट और सार्वजनिक लेजर के बीच क्रिप्टोकरेंसी डेटा को स्टोर करने और ट्रांसमिट करने में एडवांस्ड कोडिंग शामिल है।

क्रिप्टोकरेंसी का उपयोग करने से कम फीस और तेज प्रोसेसिंग समय वाले दो व्यक्तियों या व्यवसाय के लिए यह आसान हो जाता है। हालांकि क्रिप्टोकरेंसी अभी भी कई लोगों के लिए एक अनजान अवधारणा है, लेकिन इसे भुगतान करने और ऑनलाइन खरीदारी करने वाले लोगों के लिए एक आसान और सुविधाजनक तरीके के रूप में देखा जाता है।

क्रिप्टोकरेंसी कैसे काम करती है?

क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉक चेन नामक वितरित सार्वजनिक खाता पर कार्य करती है, जो मुद्रा धारकों द्वारा अद्यतन और धारित सभी लेनदेनों का एक अभिलेख है। यूजर क्रिप्टोग्राफिक वॉलेट का उपयोग करके ब्रोकर, स्टोर से करेंसी खरीद सकते हैं और खर्च कर सकते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी के मामले में कुछ भी मूर्त नहीं है। एक कुंजी है जो आपको एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को रिकॉर्ड या उपाय की इकाई को ले जाने की अनुमति देता है और कोई विश्वसनीय थर्ड पार्टी शामिल नहीं है।

यह कहा जाता है कि ब्लॉक चेन प्रौद्योगिकी पारदर्शिता में सुधार करती है, एक नेटवर्क में साझा किए जा रहे डेटा का विश्वास और सुरक्षा बढ़ाती है। लेकिन कुछ श्रेणियां ऐसी हैं जो मानती हैं कि ब्लॉक चेन प्रौद्योगिकी जटिल, अकुशल और महंगी होती है और अधिक ऊर्जा का उपयोग कर सकती है। क्रिप्टोकरेंसी में ट्रांजैक्शन के समूह को ब्लॉक के रूप में चेन में जोड़ा जाता है जो ट्रांजैक्शन की प्रामाणिकता को सत्यापित करते हैं।

सभी लेन–देन बैच साझा खाता पर दर्ज किए जाते हैं और यह सार्वजनिक होता है। कोई भी प्रमुख ब्लॉक चेन पर किए जा रहे ट्रांजैक्शन को देख सकता है।

क्रिप्टोकरेंसी में लेन–देन करने के लिए एक वॉलेट डिजिटल मुद्रा के रूप में जाना जाता है। क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट में करेंसी नहीं है, यह केवल ब्लॉक चेन पर आपके फंड का एड्रेस प्रदान करता है।

हर बार जब क्रिप्टो लेन–देन शुरू किए जाते हैं तो आप वास्तव में अपने वॉलेट से विक्रेता के वॉलेट पते पर क्रिप्टोकरेंसी की एक निर्दिष्ट राशि को अधिकृत कर रहे हैं। क्रिप्टो ट्रांजैक्शन एक निजी कुंजी के साथ एन्क्रिप्ट किए जाते हैं

और ब्लॉक चेन में धकेल दिए जाते हैं।

एक बार जिस ब्लॉक में लेन–देन की पुष्टि हो जाती है, वह खाता विक्रेता और खरीददार दोनों के पते के लिए नए क्रिप्टोकरेंसी संतुलन दिखाने के लिए अद्यतन किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया सॉफ्टवेयर के माध्यम से आयोजित की जाती है।

क्रिप्टोकरेंसी को ब्लॉक चेन क्यों कहा जाता है?

ब्लॉक, नेटवर्क पर लेन–देन डेटा का संग्रह होता है। ब्लॉक एक चेन बनाते हैं, जो पिछले ब्लॉक के संदर्भ के माध्यम से एक को दूसरे से लिंक करते हैं। लेजर में ब्लॉक बदलने के लिए एक हैकर को इसके बाद ब्लॉक की पूरी श्रृंखला का पुनरुत्पादन करना होगा क्योंकि ऐसा नहीं करना अमान्य रेफरेंस की श्रृंखला बनाएगा और इसे क्रिप्टोकरेंसी नेटवर्क द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

ब्लॉक में अतिरिक्त जानकारी शामिल है जो क्रिप्टोकरेंसी नेटवर्क को ब्लॉक सत्यापित करने में सक्षम बनाता है। खनिजों को क्रिप्टोकरेंसी और ट्रांजैक्शन शुल्क के साथ रिवॉर्ड दिया जाता है। खनिज द्वारा ब्लॉक पहेलियों के लिए मान्य समाधान की गणना किए बिना, नए ब्लॉक को ब्लॉक चेन में नहीं जोड़ा जा सकता है।

क्रिप्टोकरेंसी के मामले में हमारे मन में उत्पन्न एक प्रश्न यह है कि क्रिप्टोकरेंसी कैसे बनाएं ? हां, आप निम्नलिखित चरणों के साथ अपनी खुद की क्रिप्टोकरेंसी कर सकते हैं।

अपने उद्देश्यों को परिभाषित करें

क्रिप्टोकरेंसी करते समय पहला कदम यह सोचना है कि आपकी क्रिप्टोकरेंसी अन्य करेंसी से कितनी अलग है और क्या आप क्रिप्टोकरेंसी को भुगतान सिस्टम या स्टोर वैल्यू के रूप में उपयोग करना चाहते हैं। यह एक अनोखी क्रिप्टोकरेंसी विकसित करने में मदद करेगा।

उदाहरण के लिए बिटकॉइन का सृजन विकेंद्रीकृत विकल्प के रूप में किया गया था। जबकि इथेरियम को एक ऐसा मंच बनाने के लिए डिजाइन किया गया था जो विकासकर्ताओं को विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग बनाने की अनुमति देता है। एक बार उद्देश्यों को परिभाषित किए जाने के बाद मुद्रा के लिए लोगो चुना जाना चाहिए। वेबसाइट और व्हाइटपेपर भी बनाया जाना चाहिए। वेबसाइट को मुद्रा और यह कैसे काम करती है के बारे में वर्णन करना चाहिए। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि वेबसाइट और व्हाइटपेपर दोनों तकनीकी शब्दकोश से स्पष्ट, संक्षिप्त और मुक्त हैं। अगर वेबसाइट स्पष्ट नहीं है, तो लोग ऐसी करेंसी में निवेश नहीं करेंगे।

एक तंत्र डिजाइन करें

इस प्रक्रिया में अगला कदम एक सहमति तंत्र तैयार करना है। दो मुख्य प्रकार की सहमति प्रणाली है–क) कार्य का प्रमाण और ख) हिस्सेदारी का प्रमाण। कार्य का प्रमाण सबसे आम प्रकार की सहमति प्रणाली है। इसमें खनिज एक–दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते हैं ताकि लेन–देन को सत्यापित किया जा सके और ब्लॉक चेन में ब्लॉक जोड़ सके। ब्लॉक चेन में ब्लॉक जोड़ने वाले खनिज को क्रिप्टोकरेंसी से सम्मानित किया जाता है।

खनिजों को एक–दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं होती। इसके बजाय सिस्टम वैलिडेटर पर निर्भर करता है जो ट्रांजैक्शन को सत्यापित करने के लिए अपनी क्रिप्टोकरेंसी लेते हैं।

ब्लॉक चेन प्लेटफॉर्म चुनें

एक बार सहमति तंत्र निर्धारित हो जाने के बाद, अगला चरण ब्लॉक चेन प्लेटफार्म चुनना है। अगर कार्य तंत्र का प्रमाण चुना जाता है, तो बिटकॉइन ब्लॉक चेन स्पष्ट है, जबकि अगर स्टेक का प्रमाण चुना जाता है, तो इथेरियम, कार्डानो और तेज मै जैसे कई प्लेटफॉर्म हैं।

नोड्स बनाएँ

अगला कदम सॉफ्टवेयर डाउनलोड करना और एक नोड स्थापित करना है। नोड एक कंप्यूटर है जो ब्लॉकचेन की एक प्रति संग्रहित करता है और लेन–देन को सत्यापित करने में मदद करता है। अगर काम का प्रमाण चुना जाता है, तो खनन पूल की आवश्यकता होगी, जिसका मतलब है खनिज जो खान ब्लॉक के लिए एक साथ काम करते हैं और रिवॉर्ड शेयर करते हैं।

वॉलेट पता जनरेट करें

नोड सेट करने के बाद, आपको सर्वश्रेष्ठ क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट विकल्प के साथ वॉलेट जनरेट करना होगा। जब लोग हमारी क्रिप्टोकरेंसी खरीदना चाहते हैं तब फंड भेजेंगे। अपने कंप्यूटर पर सॉफ्टवेयर चलाकर ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग करके वॉलेट एड्रेस चुना जा सकता है।

आंतरिक वास्तुकला डिजाइन करें

अगला कदम क्रिप्टोकरेंसी के आर्किटेक्चर को डिजाइन करना है। इसमें लेन–देन प्रारूप, नेटवर्क प्रोटोकॉल और सहमति एल्गोरिथ्म जैसी चीजें शामिल हैं। इसके अलावा आपको यह तय करना होगा कि कितने सिक्कों की आवश्यकता होगी। इसे सिक्कों की आपूर्ति कहा जाता है। यहां संतुलन करना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि बहुत–से सिक्के पैदा किए जाएँ तो वे लायक नहीं होंगे। दूसरी ओर, अगर बहुत कम सिक्के बनाए जाते हैं, तो लोग इसे नहीं खरीद पाते।

एपीआई को एकीकृत करें

अगला कदम एपीआई को एकीकृत करना है। एपीआई का अर्थ होता है, एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस विभिन्न

सॉफ्टवेयर एप्लीकेशनों को एक दूसरे के साथ संचार करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, यदि काम का प्रमाण प्रयोग किया जाता है तो आपको बिटकॉइन एपीआई के साथ एकीकृत करना होगा। इससे क्रिप्टोकरेंसी को बिटकॉइन ब्लॉकचेन से बातचीत करने की अनुमति मिलेगी।

अपनी क्रिप्टोकरेंसी कानूनी बनाएं

दूसरा अंतिम कदम निर्धारित नियमों के अनुसार क्रिप्टोकरेंसी कानूनी बनाना है। इसमें एक कंपनी की स्थापना और सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना शामिल है। एक वस्तु जिसे याद रखना चाहिए वह है कुछ देशों में क्रिप्टोकरेंसी प्रतिबंधित है इसलिए लॉन्च से पहले कानूनों के लिए पर्याप्त अनुसंधान की आवश्यकता होती है।

अपनी नई क्रिप्टोकरेंसी बढ़ाएं

जहां क्रिप्टोकरेंसी में बहुत सी तकनीकी कार्य शामिल हैं, वहीं नई करेंसी के विपणन और संवर्धन पर भी ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है। अपनाए बिना क्रिप्टोकरेंसी गिरने की संभावना है। इसलिए किसी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग क्रिप्टोकरेंसी स्वीकार कर रहे हैं। क्रिप्टोकरेंसी को बढ़ावा देने का एक अच्छा तरीका है इसे स्वतंत्र बनाना। इससे करेंसी खरीदना और बेचना आसान हो जाएगा।

सिक्के बनाम टोकन को समझना

क्रिप्टोकरेंसी क्रिप्टो सिक्के हो सकते हैं या यह क्रिप्टो टोकन हो सकते हैं। अपना सिक्का बनाना या जटिल प्रक्रिया टोकन करना। दोनों डिजिटल परिसंपत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन अभी भी दोनों के बीच अंतर है। क्रिप्टो सिक्के स्टैंडअलोन मुद्राएं हैं। उदाहरण के लिए बिटकॉइन एक क्रिप्टोकरेंसी है जिसके लिए किसी अन्य प्लेटफार्म की आवश्यकता नहीं होती।

क्रिप्टोकरेंसी सिक्का

क्रिप्टोकरेंसी सिक्का विकेन्द्रीकृत डिजिटल धन है जो क्रिप्टोग्राफी का उपयोग अपने लेन–देन को सुरक्षित करने और मुद्रा की नई इकाइयों के निर्माण को नियंत्रित करने के लिए करता है। बिटकॉइन, रिपल और लाइटकॉइन क्रिप्टो सिक्कों के उदाहरण हैं।

क्रिप्टोकरेंसी टोकन एक डिजिटल आस्ति है जो किसी विशिष्ट प्लेटफॉर्म पर उपयोग के लिए बनाई जाती है। क्रिप्टो टोकन का प्रयोग प्रायः ब्लॉकचेन आधारित प्लेटफार्म पर एक आस्ति या उपयोगिता का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है। इन टोकन का उपयोग डिजिटल एसेट, यूटिलिटी या फिजिकल ऑब्जेक्ट के किसी भी प्रकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जा सकता है।

इसके अलावा, अगर आप अपनी स्टैंडअलोन करेंसी बनाते हैं, तो आप क्रिप्टोकरेंसी क्वाइन बना सकते हैं, जबकि अगर आप नया एप्लीकेशन या सर्विस बनाने के लिए ब्लॉक चेन टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हैं, तो क्रिप्टो टोकन बनाने की आवश्यकता होती है।

क्रिप्टो करेंसी बनाने में कितना समय लगता है?

यह क्रिप्टोकरेंसी बनाने के लिए प्रयुक्त विधि पर निर्भर करता है। ऑटोमेटेड टूल का उपयोग करके, क्रिप्टो 5 से 20 मिनट में तैयार हो जाएगा। मौजूदा क्रिप्टोकरेंसी कोड को बदलने का समय तकनीकी विशेषज्ञता के आधार पर अलग–अलग होता है।

प्रवीण स्तर पर प्रक्रिया में 4 घंटे तक का समय लग सकता है। विशेष विकासकर्ताओं को आपकी ओर से काम करने की अनुमति देने के लिए प्रक्रिया को आउटसोर्स किया जा सकता है। इससे प्रक्रिया कम समय में पूरी हो जाएगी। स्क्रैच से क्रिप्टो सिक्का बनाते समय प्रक्रिया में महीनों लग सकते हैं। यह इसलिए है क्योंकि विकास प्रक्रिया में अधिक समय लगता है।

क्रिप्टोकरेंसी बनाने में क्या लागत शामिल हैं?

क्रिप्टोकरेंसी बनाने की लागत नियत नहीं है। क्रिप्टोकरेंसी बिजनेस मॉडल मार्केट में अन्य इन्वेस्टमेंट की तुलना में तीन गुना तेजी से बढ़ गया। क्रिप्टोकरेंसी से आपका लक्ष्य क्या है खर्च निर्धारित करेगा। उदाहरण के लिए क्रिप्टोकरेंसी में बहुत अनुकूलन होता है तब लागत अधिक होगी। एक और परिदृश्य यह है कि आप इसे एक डेवलपर या टीम को आउटसोर्स कर सकते हैं। शामिल अन्य लागत इस प्रकार होगी .....

प्रमोशन– क्रिप्टोकरेंसी के मार्केटिंग में ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया मार्केटिंग, प्रेस मीडिया या ईमेल मार्केटिंग जैसे खर्च शामिल हैं।

लेखापरीक्षण– बाहरी लेखापरीक्षक अक्सर विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए ऐसा करते हैं। इसमें शुल्क शामिल होगा और यह आपके द्वारा चुने गए शुल्कों के आधार पर अलग–अलग होगा।

विकास– यदि आपके पास तकनीकी कौशल है तो बहुत कुछ बचाया जा सकता है। अन्यथा एक डेवलपर को नियुक्त करना होगा या इसे संभालने के लिए एक टीम होनी चाहिए।

कानूनी मुद्दे– विशेषज्ञ वकील की आवश्यकता होगी। अनेक फर्म ब्लॉकचेन विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। इसलिए यह लागत भी बढ़ाता है।

बाजार में उपलब्ध क्रिप्टोकरेंसी के प्रकार–

एथेरियम
टेथर
यूएसडी सिक्का
बाइनेंस सिक्का
कार्डानो
सोलाना
एक्सआरपी
डोजेकोइन
पोलकाडोत
बिटकॉइन

❐

अनुच्छेद 370 की पुनर्बहाली : सम्भव नहीं

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

जम्मू कश्मीर की नवगठित नेशनल कॉन्फ्रेंस की सरकार ने राज्य विधानसभा में अनुच्छेद 370 की पुनर्बहाली के लिए, पुनर्बहाली शब्द का इस्तेमाल करते हुए, ध्वनि मत से पारित कर दिया है। ऐसा लगता है कि जम्मू कश्मीर में अलगाववाद और तुष्टिकरण की राजनीति फिर से सर उठाने लगी है। लेकिन भाजपा ने एक विधान एक निशान और राष्ट्रवाद के प्रति अपनी संकल्पबद्धता को दोहराते हुए इस प्रस्ताव का, विरोध कर बताया कि यह प्रत्यक्ष तो क्या, परोक्ष तौर पर भी, किसी को घड़ी की सुइयां, पीछे मोड़ने की अनुमति नहीं देगी। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू– कश्मीर की धरती पर अनेक सकारात्मक स्थितियां बनी है। जम्मू कश्मीर को जाति, धर्म व स्वार्थी राजनीति से बाहर रखना जरूरत है। इसी दिशा में घाटी को अग्रसर करने में मोदी सरकार के प्रयास सराहनीय एवं स्वागत योग्य रहे हैं।

वर्तमान में जम्मू–कश्मीर केन्द्रशासित प्रदेश है। इसलिए वहां शासन संबंधी बहुत सारी शक्तियां उपराज्यपाल में निहित हैं। सरकार का वादा है कि वह लोगों की पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसा तभी संभव होगा जब उसका विशेष राज्य का दर्जा बहाल हो। सूत्रो के अनुसार विशेष राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग अनुच्छेद 370 की बहाली प्रस्ताव में कहीं भी नहीं कही गई है। जम्मू–कश्मीर मंत्रिमंडल ने पूर्ण राज्य के दर्जा बहाल करने का प्रस्ताव उपराज्यपाल के माध्यम से केन्द्र सरकार को पहले ही भेज दिया है।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि भारत की महानता उसकी विविधता में है। साम्प्रदायिकता एवं दलगत राजनीति का खेल, उसकी विविधता में एकता की पीठ में छुरा भोंकने जैसा है, घाटी उसकी प्रतीक बनकर लहूलुहान रही है। जब हम नये भारत, सशक्त भारत, बनने की ओर अग्रसर हैं, विश्व के बहुत बड़े आर्थिक बाजार बनने जा रहे हैं, विश्व की एक शक्ति बनने की भूमिका तैयार करने जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में जम्मू–कश्मीर सहित देश में जाति, धर्म और स्वार्थी राजनीति से, बाहर रहने की जरूरत है।

जम्मू – कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के जिस अनुच्छेद 370 को 5 अगस्त, 2019 को खत्म किया गया था, उसकी वापसी अब इतनी आसान नहीं दिखती है। सबको पता होगा कि सिर्फ विधानसभा में प्रस्ताव पारित हो जाने से अनुच्छेद 370 वापस नहीं आ सकता है। इस समय केन्द्र में एनडीए (भाजपा) की सरकार है, जिसने अनुच्छेद 370 हटाया है और इस सरकार से इसे वापस लाने की अपेक्षा रखना कहाँ तक जायज लगता है?

देखा जाए तो नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू–कश्मीर का चुनाव ही इसी घोषणा के साथ लड़ा था और जीता भी है कि वह भारतीय संविधान में राज्य को उसका विशेष दर्जा वापस दिलाएगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने सत्ता में आते ही पहला काम यही किया और विधानसभा ने राज्य को विशेष दर्जा दिए जाने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया। जबकि व्यावहारिक यह होता कि सबसे पहले जम्मू–कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की बात होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि वोट बैंक की राजनीति को देखते हुए नेशनल कॉन्फ्रेंस की सरकार ने ऐसे मुद्दे को प्राथमिकता देना जरूरी समझा, जिसे राज्य में कुछ लोगों की भावनाओं से जोड़ दिया जाये।

जम्मू – कश्मीर में अब ऐसी राजनीति की जरूरत है, जो विशेष दर्जे से हट कर, राज्य और देश की तरक्की का, नया रेखा खींचे, क्योंकि जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 और 35ए हटा कर शांति और सौहार्द के साथ लोकतंत्र और विकास की नई इबारत लिखी गयी है। विशेष दर्जा हटाने से जम्मू – कश्मीर को बहुत लाभ मिला है, वहां विकास एवं जनकल्याण के काम तेजी से हो रहे हैं, न केवल विकास योजनाएं आकार ले रही है, बल्कि वहां शांति एवं सौहार्द का वातावरण भी बना है, आतंकवादी घटनाओं पर भी नियंत्रण रखा जा रहा है। अनुच्छेद 370 का खत्म होना इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि वहां के लोगों ने साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय–विखण्डन, आतंकवाद तथा घोटालों के जंगल में एक लम्बा सफर तय करने के बाद अमन–शांति, सौहार्द एवं विकास को साकार होते हुए देख रहा है।

जम्मू – कश्मीर विधानसभा में जब यह प्रस्ताव उप–मुख्यमंत्री सुरिंदर सिंह चौधरी ने पेश किया था, तभी यह स्पष्ट हो गया था कि सुरिंदर सिंह चौधरी का चयन वहाँ की सरकार ने इसलिए ही किया था कि एनडीए (भारतीय जनता पार्टी) इसे सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश न कर सके। लेकिन एनडीए (भाजपा) ने एक विधान एक निशान और राष्ट्रवाद के प्रति अपनी संकल्पबद्धता को दोहराते हुए जम्मू – कश्मीर विधान सभा में इस प्रस्ताव का विरोध कर बता दिया है कि वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर अनुच्छेद 370 और 35ए की ओर वापस नहीं लौटेगी।

❐

हमारी सनातन संस्कृति में मिट्टी के बर्तन

युगों युगों से मिट्टी के बर्तन (मृदभांड), मिट्टी की विभिन्न मूर्तियां(मृण मूर्तियां) न केवल विश्व की विभिन्न सभ्यताओं के बारे में जानने के केंद्र रहे हैं बल्कि ये हमारे संपूर्ण भारतवर्ष के इतिहास, हमारी सनातनी प्राचीन व अक्षुण्ण संस्कृति, हमारी सनातनी परंपराओं को जानने के भी बहुत ही महत्वपूर्ण अंग व साधन रहे हैं। मिट्टी के बर्तनों ने देश–दुनिया पटल पर अपनी अनोखी, अद्भुत छाप छोड़ी है। वास्तव में, मिट्टी के बर्तनों में भारतीय पारंपरिक विज्ञान छिपा है और यही कारण है कि युगों युगों से भारतीय संस्कृति में मिट्टी के बर्तनों का उपयोग होता आया है। भारत का राजस्थान इस दृष्टि से (मिट्टी के बरतनों मृदभांड, मृणकला, टेराकोटा,पॉटरी इत्यादि के निर्माण व उनके गांव–घरों में उपयोग के मामलों में) कुछ अधिक समृद्ध व सम्पन्न रहा है। यदि हम यहां मिट्टी के बर्तनों, पॉटरी, मृदभांड, मृणकला, टेराकोटा आदि के संदर्भ में बात करें तो राजस्थान में जैसलमेर जिले का पोकरण, मेवाड़(उदयपुर) का मोलेला व गोगून्दा तथा ढूंढाड़(जयपुर) व मेवात स्थित हाड़ौता व रामगढ़ की मिट्टी की कला(मृण कला) की प्रसिद्धि देश में ही नहीं, अपितु विदेशों तक में फैली हुई है, जिनमें मिट्टी से बनी मूर्तियां ही नहीं अपितु मिट्टी के बर्तन बहुत ही महत्वपूर्ण व अहम् स्थान रखते हैं। मेवाड़(उदयपुर व इसके समीप क्षेत्र) स्थित आहड़ सभ्यता, गिलूण्ड, बालाथल आदि के साथ ही हनुमानगढ़ का कालीबंगा पुरास्थल ऐसे स्थल रहे है जो पुरासम्पदा के रूप में माटी की कला, मोहरे, मृदभाण्ड(मिट्टी के बरतन) व मृणशिल्प आदि राज्य के पुरा कला वैभव की महता को रेखांकित करते रहे हैं। यहाँ मृणकला की बात मैं इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मृणकला से ही हमारे घरों में प्राचीनकाल में इस्तेमाल किए जाने वाले मिट्टी के बर्तन कहीं न कहीं जुड़े हुए हैं। वैसे मृणकला (मिट्टी से कलाकारी) को अंग्रेजी में श्टेराकोटा आर्टश कहा जाता है। इतिहास के अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि नव पाषाण काल में कृषि व पशुपालन ने मानव को मिट्टी के बर्तन(मृदभांड) बनाने लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया। आज के युग में मृदभांडों(मिट्टी के बर्तनों) की अपनी उपयोगिता व महत्व है। लेकिन बड़ी विडंबना की बात है कि जिन मृदभांडों से हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता की पहचान विश्व में रही है, आज हम इन मृदभांडों(मिट्टी के बर्तनों) की उपयोगिता भुलाते चले जा रहे हैं। हमारी युवा पीढ़ी तो धातु युग में खुशी मना रही है, वह मिट्टी के बर्तनों के चक्कर में नहीं फंसना चाहती है और न ही इनके महत्व व उपयोगिता को, इनसे होने वाले स्वास्थ्य लाभों से ही अवगत होना चाहती है। जानकारी देना चाहूंगा कि सम्भवतः नव पाषाण काल में खाद्य सामग्री की अधिकता के कारण मानव को उसे(खाद्य सामग्री) संग्रहित अथवा एकत्रित करने के लिए बर्तनों की जरूरत पड़ी होगी। वास्तव में , मानव की इसी जरूरत ने मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को जन्म दिया था। विश्व की विभिन्न सभ्यताओं में मिट्टी के बर्तन मिले हैं, जिन्हें इतिहास की भाषा में मृदभांड (मिट्टी के भांड या मिट्टी के बर्तन/मर्तबान) कहा जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि पाषाणकाल के शुरूआती 3 कालों तक हमें मृद्भांड प्राप्त नहीं होते हैं। वास्तव में, मध्य पाषाण काल, नवपाषाणकाल और ताम्र पाषाण काल के दौरान मृद्भांडों का निर्माण किया जाता था। अधिकतर पुरातत्वस्थलों से इतनी बड़ी संख्या में मृद्भांड कैसे और क्यों मिलते हैं तो इसका सटीक व सही जवाब यह है कि मिट्टी के बर्तन मजबूती में धातु के बर्तनों से कमजोर होते हैं

✍ **सुनील कुमार महला**

अतः वे बड़ी आसानी से टूट जाया करते थे, उनको टूटने के बाद प्राचीन लोग उन्हें अपने आस पास ही फेंक दिया करते थे जिसके कारण हमें इतनी बड़ी संख्या में मिट्टी के बर्तन मिल जाते हैं। मोहनजोदड़ो, नौसारों,हड़प्पा एवं चन्हूदड़ों से मृदु भांड निर्माण के भठ्ठे मिले हैं। हड़प्पीयन मृदमाण्डों पर क्रमशः त्रिभुज, वृत्त, वर्ग आदि ज्यामितीय आकृतियों, पीपल की पत्ति, खजूर, ताड़, केला, आदि वनस्पतियों, वृषभ, हिरण, बारहसिंघा, मोर, सारस, बतख आदि पशु–पक्षियों एवं मछली का चित्रण विशेष लोकप्रिय था। शवाधान से प्राप्त मृदभाण्डों पर सामान्यतः हाजा पक्षी (मोर) का अंकन हुआ है। हड़प्पा के मृदभाण्डों पर जाल के साथ मछुवारे का चित्रण एवं दूध पिलाती हिरणी का चित्रण, मोहनजोदड़ो के मृदभाण्ड पर कनखजूरे का अंकन तथा लोथल के मृदभाण्ड पर प्यासा कौआ और चालाक लोमड़ी की आकृति का अंकन किया गया है। कब्रिस्तान–भ् से प्राप्त बर्तन पर मृगया का चित्र है। इस पर शिकारी मृग का शिकार करते हुए तथा कुत्ते को हिरण का पीछा करते हुए दिखाया गया है। मोहनजोदड़ो के एक बर्तन पर नाव का चित्र खुदा है। लोथल के अन्य मृदभाण्ड पर बारहसिंहे को पेड़ के नीचे दर्शाया गया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार दुनिया के अब तक की सबसे प्राचीनतम मृदभांड के अवशेष चीन से प्राप्त हुए हैं जिनकी तिथि करीब

18,000 ईसा पूर्व बताई गई है। दूसरे शब्दों में यह बात कही जा सकती है कि मिट्टी के बर्तन, खाना पकाने और भोजन परोसने और पानी ढोने के लिए इस्तेमाल होने वाले मिट्टी के बर्तनों का निर्माण कम से कम 20,000 साल पहले चीन में किया गया था। मिट्टी के बर्तन , सजावटी कलाओं में सबसे पुराने और सबसे व्यापक माने जाते हैं। यहाँ जानकारी देना चाहूंगा कि भारतीय गांवों में मिट्टी के बर्तनों का इतिहास भारत की सबसे पुरानी सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता से मिलता है। यहाँ हस्तनिर्मित और पहिया–निर्मित दोंनो प्रकार के बर्तन मिलते हैं।

नवपाषाण काल के साथ ही मिट्टी के बर्तनों में काफी सुधार देखने को मिला। चाक (जिस पर मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं) के आविष्कारध्खोज के साथ ही मिट्टी के बर्तनों के अनेक स्वरूप सामने आने लगे। वास्तव में मिट्टी के बर्तनों को जिस स्थान पर बनाया जाता है उसे भी चाक (पॉटर) के नाम से जाना जाता है। पहले चाक को हाथ से घुमाकर मिट्टी के बर्तन बनाये जाते थे और बाद में उन्हें आग में पकाया जाता था। आज चाक मशीनों की सहायता से घुमाये जाते हैं। मिट्टी के बर्तन तेजी से बनने लगे हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि चीन के अतिरिक्त भी विश्व के प्रत्येक हिस्सों में समय समय पर खुदाई के दौरान पुरातत्वविदों द्वारा मिट्टी से बने अनेक बर्तन या वस्तुएं प्राप्त की गयी हैं, और मिट्टी के बर्तनों का सबसे पुराना प्रमाण जापान में 10,000 ईसा पूर्व का है। मिट्टी के बर्तनों के मामलों में चीन व जापान दोनों ही देशों का इतिहास काफी पुराना है। वैसे यह भी जानकारी मिलती है कि चीन के जियांग्शी प्रांत में जियानरेन्डोंग गुफा में भी मिट्टी के बर्तन पाए गए हैं। भारत में प्राचीनतम मृद्भांड (मिट्टी के बर्तन) के अवशेष लहुरदेवा से प्राप्त हुए जिसे की 7,000 ईसा पूर्व का माना जाता है। इस पुरास्थल की खुदाई डॉ राकेश तिवारी जी ने कराई थी। भारत में चाक पर मिट्टी के बर्तन मेहरगढ़ काल संख्या 2 से शुरू हुआ जिसका तिथि 5,500 ईसा पूर्व से लेकर 4,800 ईसा पूर्व है। सिन्धु सभ्यता के उदय के बाद मानो भारत में मृद्भांड(मिट्टी के बरतन) बनाने की परंपरा में एक क्रान्ति सी आ गई थी और यहाँ से अनेकों प्रकार के मिट्टी के बर्तनों(मृण पात्रों, मृदभांडों) आदि का विकास होना शुरू हुआ तथा इस काल में बर्तनों को रंगने तथा उन पर कलाकृतियाँ बनायी जानी शुरू हो सकी। मृद्भांड पर बनी कलाकृतियाँ प्राचीनकाल के समाज और संस्कृति पर प्रकाश डालने का कार्य करती हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि मिट्टी के बर्तनों को एक कला का रूप बनाने का श्रेय यूनानियों को दिया जाता है। कुम्हारों(मिट्टी के बरतन बनाने वाले कारीगर) को शिल्पकारों की संज्ञा दी गई है। जानकारी मिलती है कि प्राचीन यूनानियों ने मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तन बनाए थे और भोजन पकाने या भंडारण आदि के लिए उस समय बड़े बर्तनों का उपयोग किया जाता था। लोगों के खाने–पीने के लिए छोटे कटोरे और प्याले बनाए जाते थे। यहाँ तक कि सजावट के लिए भी बर्तनों (फूलदान वगैरह) का बखूबी उपयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त, अंतिम संस्कार (जला) के बाद अस्थियों की राख तक को मिट्टी के बर्तनों में दबा दिया जाता था। भारत में आठ हजार ई. पू. बर्तनों के इस्तेमाल किए जाने की जानकारी मिलती है। हड़प्पा सभ्यता के मिट्टी के बरतनों का रंग लालध्गेरूआ था।काली मिट्टी जो करिया मिट्टी और सफेद मिट्टी जो पौंड्रा मिट्टी कहलाती है ,बर्तन बनाने के काम के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं, लेकिन इसमें भी काली मिट्टी सबसे अच्छी व शक्तिशाली समझी जाती है,जिससे बरतन बनाये जा सकते हैं।यह भी जानकारी मिलती है कि मिट्टी के बर्तन, खाना पकाने, भोजन परोसने और पानी ढोने के लिए इस्तेमाल होने वाले मिट्टी के बरतनों का निर्माण कम से कम 20,000 साल पहले चीन में किया गया था। यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि प्रागैतिहासिक मानव ने मिट्टी के उपयोगी गुणों की खोज कर ली थी।

जापान होंशू द्वीप से मिट्टी के प्राचीन बरतन मिलें हैं। भारतीय सभ्यता संस्कृति अपने आप में अनूठी रही है और यहाँ बहुत ही प्राचीन समय से ऋषि–मुनियों के समय से ही मिट्टी के बरतनों का उपयोग होता आया है। प्राचीन काल में और आज भी कहीं कहीं गांवों, ढ़ाणियों में मिट्टी के बर्तनों का बहुत ज्यादा प्रयोग किया जाता है इन बर्तनों में क्रमशः मटका या घड़ा, परात, तवा , सुराही, गुल्लक, हांडी ढकणी या ढाकणी, बिलौना(दूध बिलौने के लिए इस्तेमाल), दीपक, कुल्हड़, तावणी, कुंडा, कटोरा, पारी, सिकोरा(पक्षियों के पानी पीने के लिए) शामिल किए जा सकते हैं। आज राजस्थान के बहुत से गांवों में मिट्टी के जल पात्र यथा मांग्या, तपक्या, तौलडी, मटका–मटकी, माट, झाल, मूण, सुराही, लोटिया, घड़ा व घडिया आदि को चाक पर बनाकर अपनी परम्पराओं, सभ्यता–संस्कृति का निर्वाह कर रहे हैं। भोजन पकाने व परोसने के लिए हांडी, सांदकी, घामला, कडकल्ला, कूंडी, कूंडा, चामली, चापटी, धीलडी, कढ़ावणी, बिलोवणी, तवा, सकोरा, कुल्लड़, करवा, कूलडा, कूलडी, झावा, सिराई, करी तथा झोलवा आदि मृण पात्रों को बनाया जाता है। इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि वैदिक लोग 4 प्रकार के मिट्टी के बर्तनों से परिचित थे – काले और लाल बर्तन, काले–स्लिप्ड बर्तन, चित्रित ग्रे बर्तन और लाल बर्तन। हमारे देश के राज्य उत्तर प्रदेश

के जिले बुलंदशहर जिले का खुर्जा देश में इस्तेमाल होने वाले चीनी मिट्टी के एक बड़े हिस्से की आपूर्ति करता है, इसलिए इसे कभी–कभी सिरेमिक सिटी भी कहा जाता है।यह मिट्टी के बरतनों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। वैसे हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के गांव काले मिट्टी के बर्तनों के लिए विख्यात हैं और राजस्थान में जैसलमेर के पोखरण में नक्काशीदार सजावटी पैटर्न के साथ शैलीगत रूप हैं। राजस्थान के दौसा जिले के बसवा कस्बे के मिट्टी के बर्तन भी खास पहचान रखते हैं। राजस्थान के बीकानेर जिले के भी मिट्टी के बरतन काफी प्रसिद्ध हैं। राजस्थान के सवाईमाधोपुर में फूलडोल मेले के दौरान् मिट्टी के बरतने खरीदने की बरसों पुरानी परंपरा है। कहते हैं कि यहाँ 150 सालों सेगर्मी की शुरुआत से पहले आस–पास के गांव के लोग मिट्टी के बर्तन खरीदने आते है। राजस्थान के नागौर केचेनार गांव के कुम्हार मिट्टी के बर्तन व मूर्तियां बनाने और उन पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। चेनार गांव में मिट्टी को सबसे पहले चक्की के माध्यम से पीसकर महीन बनाया जाता है। फिर उस मिट्टी को पानी में भिगोकर गेहूं के आटे की तरह गोंदा (गूंथा) जाता है और इसके बाद चाक के माध्यम से अलग–अलग प्रकार के बर्तन बनाए जाते हैं तथा विभिन्न प्रकार के बर्तन जैसे परात, गमले, देगची बनाई जाती है। राजस्थान के बूंदी जिले के ठिकरदा गांव में आज भी पुरानी संस्कृति जिंदा है। यहां पर करीब 500–1000 घर ऐसे हैं, जहां मिट्टी के बर्तनों को बनाने का काम किया जाता है। जानकारी देना चाहूंगा कि राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के रतलाम मार्ग पर स्थित बोरतलाब गांव की पहचान मिट्टी के बर्तन बनाने के नाम से होती है। इस गांव में पिछले 40–45 साल से प्रजापत समाज के लोग मिट्टी के मटके व बर्तन बना रहे हैं। राजस्थान के जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, अलवर और सवाई माधोपुर मिट्टी के बरतनों के लिए प्रसिद्ध हैं।जयपुर से सटे चौमूं कस्बे के समीप बसा हाड़ौता गांव की कलागत पहचान माटी की कला के रूप में रही है तथा आज भी यहां पारम्परिक मृणपात्रों को बनाने की परम्परा के विकसित रूप को देखा जा सकता है। प्रमुख रूप से यहां पर घरेलू उपयोग में आने वाले माटी के बर्तन तो बनते ही हैं, बड़े आकार के मृद भाण्ड व

सजावटी उपादानों के लिए भी हाड़ौता के मृण कलाकार प्रसिद्ध रहे हैं। कहावत भी हैं कि हाड़ौता में दो ही चीजे प्रसिद्ध हैं– ऊँट लड्डे तथा माटी के बरतन। जयपुर की ब्लू पॉटरी तो प्रसिद्ध है ही। गोगुन्दा के कुंभकार दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले मृण पात्रों के साथ ही कृषि कर्म, तीज–त्यौहार पर विशेष मृण पात्रों को बनाते हैं।

यहाँ के आदिवासी समाज आज भी अपने दैनिक उपयोग के बर्तनों के रूप में गोगून्दा में बने माटी के पात्रों को खरीद कर ही परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। कुएं से जल निकालने का मृण पात्र ''गेड'' भी यहीं के कुंभकार बनाते हैं। मिट्टी के पात्रों में कुंजा, कुण्डी, परात, गिलास,खरल, कुलड़ी, सुराही, कुल्लड़(सिकोरा) व लोटे सम्मलित होते हैं। उत्तर प्रदेश के निजामाबाद जिले के गांव भी चांदी के पैटर्न वाली काली मिट्टी के बर्तनों के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार के मिट्टी के बर्तन आंध्र प्रदेश के बीदर के काम से मिलते जुलते हैं। मनुष्य के विकास से लेकर आज तक भी मिट्टी के बरतन किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहे हैं लेकिन यह बात अलग है आज के समय में जब हम आधुनिकता के रंगों में लगभग लगभग रंग चुके हैं, मिट्टी के बरतनों का साथ हमने लगभग लगभग छोड़ सा ही दिया है। चाक के आविष्कार से पहले हाथ से मिट्टी के बरतन बनाये जाते थे। मिट्टी के बरतन हाथ से बनाकर उन्हें आग व धूप में सुखाया जाता था। आग व धूप में सुखाने से बरतन टिकाऊ व पक्के बनते थे। वास्तव में पहले के जमाने में मिट्टी के पिंडों को वांछित आकार की वस्तुओं में बनाकर उन्हें उच्च तापमान में पकाकर काम में लिया जाता था। आज के युग में मिट्टी के बरतनों में खाना बनाने का प्रचलन नहीं है, अथवा बहुत कम है, क्यों कि हम आधुनिकता की आड़ में मिट्टी के बरतनों की उपयोगिता, इनके विशेष फायदों को पूरी तरह से भुला चुके हैं और इन बरतनों में खाना बनाना हमें झंझट सा लगने लगा है, क्यों कि एक तो ये आसानी से आज के जमाने में उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, जैसा कि पहले की तुलना में मिट्टी का अभाव(कंक्रीट के जंगलों के कारण),कारीगरों का अभाव हो गया है। मिट्टी के बरतनों को बनाने में परिश्रम भी बहुत लगता है और इन्हें धातु के बरतनों की तुलना में अधिक संभाल कर भी रखना पड़ता है, क्योंकि ये नाजुक होते हैं और टूट सकते हैं।आज का युग धातुओं का युग है। इसलिए घरों में भी हम सभी अधिकतर धातुओं से बने बरतनों का ही उपयोग करते हैं। सच तो यह है कि आधुनिकता की चकाचौंध में और पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगकर हम मिट्टी के बरतनों को लगभग लगभग बिसरा चुके हैं। आज घरों से मिट्टी के बरतन नदारद हैं और धातु के बरतनों का भंडार है। मसलन स्टील, एल्युमिनियम, तांबा, पीतल, कांसा,चांदी,लोहा आदि धातुओं के बरतन ही आज हमारे रसोईघरों में दिखते हैं। इनमें भी ज्यादातर हम स्टील, पीतल, तांबे,लोहे और एल्युमिनियम का ही उपयोग अधिक करते हैं। कांसे के बरतन,तांबे व पीतल,चांदी व लोहे जैसी धातुओं के बरतन भी कम ही घरों में आजकल दिखते हैं। हमारे घरों में एल्युमिनियम का उपयोग लगातार बढ़ रहा है, क्योंकि प्रेशर कुकर ज्यादातर इसी धातु के बने होते हैं और एल्युमिनियम धातु को स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं माना जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि एल्युमीनियम के बर्तन भोजन के 80 प्रतिशत से ज्यादा पोषक तत्व समाप्त कर देते हैं। वैसे, बरतनों में चांदी, लोहा,पीतल, स्टील, कांसा सबसे अच्छे माने जाते हैं, इनमें भी कांसा और चांदी सबसे अच्छे होते हैं। कांसे के बरतन तो अब गांव घरों में ही पाये जाते हैं और युवा पीढ़ी तो इस धातु के बारे में ठीक तरह से जानती भी नहीं है। यदि हम यहाँ कांसा धातु की बात करें तो काँसा (संस्कृत कांस्य) संस्कृत कोशों के अनुसार श्वेत ताँबे अथवा घंटा बनाने की धातु को कहते हैं। विशुद्ध ताँबा लाल होता हैय उसमें राँगा मिलाने से सफेदी आती है। इसलिए ताँबे और राँगे की मिश्रधातु को काँसा या कांस्य कहते हैं। इन सभी धातुओं के बीच आज हमारे घरों के रसोईघरों से जो चीज नदारद हो गई है, वह है मिट्टी से बने बरतन। हमारी सनातन भारतीय संस्कृति हमेशा से

महान थी और रहेगी भी, जहाँ ऋषि मुनियों ने जीवन जीने के उत्तम तरीके बताये थे जिससे ना केवल हमारी आयु बढ़ती थी, बल्कि हम हमेशा के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ भी रहते थे। उसी में से एक था हमेशा मिट्टी के बने बर्तनों में भोजन बनाना।

किंतु समय के साथ–साथ हमारे ऊपर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ता गया व आजकल लगभग हर घर में एल्युमीनियम के बर्तनों में खाना बनाया व खाया जाने लगा हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक हानिकारक हैं। आज घरों में धातुओं के बरतन के अधिक इस्तेमाल के कारणों में यह भी एक प्रमुख कारण है कि धातु से बने बर्तनों के टूटने का खतरा भी नही होता हैं जबकि मिट्टी के बर्तन गिरते ही टूट जाते हैं।कुछ लोग इसे अपनी ख्याति से भी जोड़कर देखते हैं और सोचते हैं कि मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाना निर्धन लोगों का कार्य हैं और यह कहीं न कहीं उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ जाता है। एक कारण यह भी है कि आज बड़ी बड़ी नेशनल व मल्टीनेशनल कंपनियों के द्वारा जो बर्तन बनाये जाते हैं वही बर्तन सभी को दुकानों, शॉपिंग माल्स, ऑनलाइन वेबसाइट पर आसानी से मिल जाते हैं व साथ ही उनमें कई तरह के डिजाईन भी मिलते जिस कारण लोग उन्हीं को खरीदने में अपनी रूचि दिखाते हैं।आज कोई अपने घर में मिट्टी से बने बरतन रखता है तो उसे पिछड़ा हुआ समझा जाता है लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि मिट्टी के बरतन स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे अच्छे व बेहतरीन माने जाते हैं। आज भी बहुत से गांवों में दूध–दाल,सब्जी–भात,रोटी,चूरमा बनाने के लिए मिट्टी के बरतनों का उपयोग किया जाता है। पानी पीने के मटके तो आपको प्राचीन प्याऊं में मिल जायेंगे। मिट्टी के बरतनों में पका खाना सेहत के लिए वरदान है। आज बड़े बड़े शहरों में लोग मिट्टी के बरतनों का खाना खाने के लिए विभिन्न रेस्टोरेंट, ढ़ाबों,होटलों में जाते हैं। आप देखिए कि आज तमाम बड़े बड़े तीन– पांच और सात सितारा होटलों में मिट्टी के बर्तनों में पका खाना बहुत स्पेशल माना जाता है। इसके लिए चार्जेज भी स्पेशल होते हैं। आज संसाधनों के अभाव में हम ऐसा करते हैं, गांवों में भी अब मिट्टी नहीं रही,आधुनिकता के चलते कुम्हार भी अब मिट्टी के बरतनों में कम ही रूचि दिखाते हैं, क्योंकि धातुएं आ गई हैं और कोई इन्हें खरीदता भी नहीं है। हमारे पास समय का भी अभाव है, लेकिन आज मिट्टी के बर्तन में बना खाना संसाधनों की कमी का नहीं बल्कि सम्पन्नता का प्रतीक है। आज शहरों में कामकाजी महिलाओं के पास खाना बनाने के लिए अधिकतम एक घंटे का समय होता है, उसी में उन्हें कई कई किस्म का खाना बनाना होता हैं बल्कि साथ ही साथ सबके टिफिन पैक करने होते हैं और भागमभाग में यह भी ध्यान रखना होता है कि खाने ऐसे न हों जिसे खाते समय अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत पड़े। इसलिए आज जब खाना बनता है, उसमें स्वाद के साथ साथ समय और कहीं भी किसी भी तरह की स्थितियों में उसे खा लेने की सहूलियत शामिल होती है। मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने के लिए बहुत ज्यादा समय चाहिए। कई गुना ज्यादा एनर्जी चाहिए और इस खाने का लुत्फ उठाने के लिए बहुत ज्यादा समय चाहिए, जो कि इस भागदौड़ व धूप भरी जिंदगी में शायद किसी के पास नहीं है। आपने महसूस किया होगा कि पहले लोग गांवों में बड़े चाव से मिट्टी के बरतनों में बना खाना खाते थे और कम बीमार पड़ते थे और सौ–सौ साल तक जीते थे, लेकिन आज ऐसा क्या हो गया है कि आदमी जल्दी जल्दी बीमार पड़ रहा है और पैंसठ–सत्तर की उम्र भी बमुश्किल पकड़ रहा है। आज प्राकृतिक चिकित्सक मिट्टी के बरतनों में खाना खाने के लिए हम सभी को सलाह देते हैं तो उसका प्रमुख कारण यह है कि मिट्टी के बरतनों में पकाये जाने वाला खाना विभिन्न औषधीय तत्वों से सरोबार रहता है, उसके पोषण तत्व हमेशा बने रहते हैं और वे जल्दी नष्ट नहीं होते। मिट्टी के बरतनों में बने खाने में भरपूर आयरन,फास्फोरस, कैल्शियम और मैग्नीशियम मौजूद होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य को हमेशा अच्छा रखने में अपनी भूमिका निभाते हैं। मिट्टी के बरतनों में छोटे छोटे असंख्य छिद्र होते हैं, जिससे उनमें पकने वाले भोजन को आग और नमी हर तरफ से बराबर मिलती रहती है। अधिक तेल व वसा को मिट्टी के बरतन कुछ हद तक सोख लेते हैं। याद रखिए कि मिट्टी के बरतनों में खाना पकता है, गलता नहीं है। हमारे शरीर को 18 प्रकार के सूक्ष्म पोषक तत्व चाहिए होते हैं जो मिट्टी के बर्तनों से नष्ट नहीं होते हैं। साथ ही मिट्टी में किसी भी प्रकार का रसायन या अन्य हानिकारण तत्व भी नहीं मिला होता है जिससे भोजन हमेशा ताजा व उत्तम ही रहता है। अन्य बर्तनों की अपेक्षा मिट्टी के बर्तन में खाना जल्दी से ठंडा नही होता क्योंकि मिट्टी अधिक समय तक गर्म रहती हैं व अंदर का तापमान भी जल्दी से नीचे नहीं गिरता। इसलिए मिट्टी के बर्तनों में पके खाने को फिर से गर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। भोजन को जब हम फिर से गर्म करते हैं तो उसके ज्यादातर पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं जो मिट्टी के बर्तन में नहीं होता।मिट्टी के बर्तन की यह भी सबसे बड़ी उपलब्धि है कि ये हमारे भोजन को स्वास्थ्यवर्धक बनाने के साथ–साथ उसे हमारे लिए स्वादिष्ट व सुगंधित भी बनाते हैं। वास्तव में सेहत को अच्छा व दुरस्त बनाने के लिए मिट्टी के बरतनों में खाना बनाना अच्छा ही नहीं अपितु सर्वोत्तम माना जाता है। लोहे के बरतनों में भोजन पकाना स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा है,पीतल के बरतन में भोजन पकाने से हमारे शरीर को कई प्रकार के पोषक तत्व मिलते हैं, कांसे के भी अनेक लाभ है और स्टील भी ठीक है लेकिन खाना पकाने के लिहाज से एल्यूमीनियम धातु के बरतनों को सबसे खराब माना जाता है। आज हमारे ज्यादातर घरों में इस धातु के बर्तन मिल जाते हैं। एल्यूमिनियम बॉक्साइट का बना होता है, इसमें बने खाने से शरीर को सिर्फ नुकसान होता है। आयुर्वेद के अनुसार यह आयरन और कैल्शियम को सोखता है, इसलिए इससे बने पात्रों का उपयोग नहीं करना चाहिए। ब्रास,नॉनस्टिक, एल्युमिनियम व स्टील ने आज हमारे रसोईघरों में अपना सिक्का जमा लिया है लेकिन अब फिर से बदलते दौर में मिट्टी के बर्तनों का चलन वापिस ट्रेंड में आ रहा है। इन दिनों बाजार में मिट्टी से बने कुल्हड़ में चाय, पिज्जा, लस्सी, जूस आदि का जायका खूब लिया जा रहा है। हम हमारी सनातनी सभ्यता–संस्कृति की ताकत को पुनः पहचान रहे हैं। अंत में यही कहूंगा कि –देश की मिट्टी से गहरा रिश्ता रखते हैं। हम भारतीय है। ये गर्व से कहते हैं, हम सनातनी संस्कृति, संस्कारों और परंपराओं में बहते हैं।

(आर्टिकल का उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है।) ❐

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

“बोलो जिंदगी” परिवार की तरफ से सभी देशवासियों को क्रिसमस पर्व की हार्दिक बधाई